रजत जयंती वर्ष

अहर्निशं जागरणीयम् लोकहितं मम करणीयम्

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

वैशाख-ज्येष्ठ, कलियुगाब्द 5120, मई, 2018

राजनीतिक विद्वेष का शिकार न बने SC/ST ACT

मूल्य 10/- प्रति

विकास की राह पर शिखर की ओर हिमाचल

नई सोच नई पहल के सौ दिन

प्रमुख उपलब्धियाँ

- सामाजिक सुरक्षा पेंशन के अंतर्गत बिना आय सीमा के वृद्धावस्था पेंशन प्राप्त करने की आयु सीमा 80 वर्ष से घटाकर 70 वर्ष की, हज़ारों वृद्धजन लाभान्वित।
- 5 स्वास्थ्य उप–केंद्रों में टेली–मेडिसन सुविधा और 101 आयुर्वेदिक स्वास्थ्य संस्थानों में योग क्लीनिक आरम्भ।
- उद्योग विभाग के खनन तथा स्टार्ट–अप पोर्टल का शुभारम्भ, सभी आवश्यक दस्तावेज ऑनलाइन जमा करने की सुविधा।
- राज्य में सड़कों के रख–रखाव व टारिंग के कार्य के लिए 200 करोड़ रू. की राशि जारी।
- हिमाचल नम्बर के छोटे वाहनों को बैरियरों पर प्रवेश शुल्क की छूट।
- 200 पयेजल आपूर्ति योजनाओं का कार्य शीघ्र पूरा करने के लिए राज्य सरकार ने जारी की 15 करोड़ रुपये की धनराशि।
- प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत आवासीय सुविधा प्रदान करने के लिए 42 नगरों में पात्र लाभार्थी चयनित किए गए।
- प्रदेश की 20 नगर परिषदों को नगर नियोजन के अंतर्गत नक्शे पास करने की शक्तियां प्रदान।
- 2001 मैगावाट क्षमता की 31 पन विद्युत परियोजनाओं के लिए अंतरराष्ट्रीय निविदाएं आमंत्रित।
- प्रदेश के लगभग 300 संवेदनशील एच.आई.वी. पीड़ित बच्चों को मुफ्त पौष्टिक आहार देने की व्यवस्था आरम्भ।
- ग्राम पंचायतों में सभी परिवार रजिस्टर और कैश बुक ऑनलाइन किए। सहकारी सभाओं के पंजीकरण और रिकॉर्ड के रख–रखाव के लिए सॉफ्टवेयर किया तैयार।
- 4101 नये अभ्यर्थियों को कौशल विकास भत्ता तथा 1737 युवाओं को बेरोज़गारी भत्ता दिया गया।
- खनन नीति का सरलीकरण किया और अवैध खनन पर सख्त दण्ड का प्रावधान।
- अनुबंध आधार पर नियुक्त महिला कर्मचारियों का मातृत्व अवकाश 135 से बढ़ाकर 180 दिन किया।
- आयुर्वेदिक चिकित्सा अधिकारियों के 200 पद भरने की प्रक्रिया आरम्भ।
- महिला सुरक्षा के लिए गुड़िया हैल्पलाइन टोल फ्री नं. 1515 और शक्ति बटन ऐप आरम्भ।
- सड़क निर्माण के लिए 123 डी.पी.आर. तैयार, 213 कार्य निष्पादन के लिए सौंपे गए। 43 राष्ट्रीय राजमार्गों हेतु सड़क परामर्शदाताओं की सेवाएं लेने के लिए पत्र जारी।
- जन सुविधा के लिए इलैक्ट्रिक बसें और इलैक्ट्रिक टैक्सियां आरंभ, आरटीओ कार्यालयों में ऑनलाइन व डिजिटल भुगतान की सुविधा आरंभ।
- सिराज क्षेत्र में वंचित बस्तियों को पेयजल उपलब्ध करवाने हेतु 41 करोड़ रूपये की घोषणा।
- सिंगल विंडो के तहत 456.43 करोड़ रू. निवेश की 17 औद्योगिक इकाइयों को स्वीकृति प्रदान।
- मुख्यमंत्री द्वारा कल्याण योजनाओं की ऑनलाइन निगरानी के लिए 'सी.एम. डैशबोर्ड' आरम्भ।
- 'मेरा हिमाचल, स्वच्छ हिमाचल' अभियान के अंतर्गत 9085 पारम्परिक जल स्रोत व 14116 पानी के टैंक साफ किए गए।
- पहली बार टेपरा, द्योथल, जंजैहली, कामरू तथा चरू पाँच पर्यावरण गांव स्थापित करने की योजना आरम्भ, प्राकृतिक संसाधनों का न्यायसंगत दोहन होगा सुनिश्चित।
- शिमला शहर के ग्रिड से जुड़े पहले 35 किलोवाट सौर ऊर्जा संयंत्र का शुभारम्भ, आगामी 25 वर्षों में होगी 97 लाख रू. की बचत।
- 25 सेवाओं के लिए सीधा लाभ हस्तांतरण सेवा तथा आंगनबाड़ियों के लिए मोबाइल ऐप आरम्भ।
- ताल, हमीरपुर में 3.25 करोड़ रूपये की लागत से तरल नाइट्रोजन संयंत्र, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत स्थापित।
- 108 बाइक एम्बुलेंस सेवा आरम्भ। हिमाचल यह सेवा आरम्भ करने वाला उत्तरी भारत का पहला राज्य बना।
- उड़ान -II के अन्तर्गत प्रदेश में 5 हैलीपैड के निर्माण के लिए डी.जी.सी.ए., पवन हंस तथा पर्यटन विभाग की संयुक्त टीम द्वारा व्यवहारिकता सर्वेक्षण किया गया।
- वन व खनन माफिया से कड़ाई से निपटने के लिए होशियार सिंह हैल्पलाइन टोल फ्री न0. 1090 आरम्भ की गई।
- 98 कि.मी. मोटर योग्य सड़कें बनाई गईं तथा 212 कि.मी. सड़कों पर क्रॉस ड्रेनेज सुविधा प्रदान।
- जापान की अन्तरराष्ट्रीय सहयोग एजेंसी द्वारा हिमाचल के लिए 800 करोड़ रू. की वन प्रबंधन एवं आजीविका सुधार योजना स्वीकृत।
- सरदार वल्लभ भाई पटेल क्लस्टर विश्वविद्यालय विधेयक को मंजूरी, 55 करोड़ रू. होंगे खर्च, एम.एल.एस. महाविद्यालय, सुन्दरनगर में किया शिलान्यास।
- चालू 61 पेयजल योजनाओं का कार्य पूरा करने के लिए अतिरिक्त धन उपलब्ध करवा कर कार्य पूरा किया, 630 बस्तियों की 1 लाख से अधिक जनसंख्या लाभान्वित।
- कर्मचारियों व पेंशनधारकों को 700 करोड़ रुपये के वित्तीय लाभ दिए।
- मण्डी ज़िला के जंजैहली में पर्यटन सांस्कृतिक केन्द्र तथा थुनाग में ट्रैक्र्स होस्टल के लिए ए.डी.बी. द्वारा 27 करोड़ रुपये स्वीकृत।
- मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के लिए 'नील क्रांति' के तहत 80 नई ट्राऊट इकाइयां स्थापित।
- एस.एम.सी. शिक्षकों को एक साल का सेवा विस्तार व मानदेय में 20 प्रतिशत की बढ़ोतरी, 2630 एस.एम.सी. शिक्षक लाभान्वित।
- कृषक बकरी पालन योजना के तहत 200 बकरी इकाइयाँ स्थापित व बी.पी.एल. किसानों को 60 प्रतिशत सब्सिडी पर प्रदान की।
- सिद्धबाड़ी, नाहन, सुंदरनगर और शमशी में शहरी आजीविका केंद्रों का निर्माण कार्य शुरू।

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश

नारं परमात्म विषयकं ज्ञानं ददाति नारद, नारं नरसमूहं दयते पालयति
ज्ञान दानेनेति नारदः, ददाति नारं ज्ञानं च बालकेभ्यश्च बालकः

अर्थात् सर्वोच्च या परमज्ञान देने वाले का नाम है नारद। नारं शब्द का अर्थ दो तरह से प्रस्तुत कर सकते हैं। एक तो सामान्य अर्थ है परमज्ञान, और दूसरा विशेष अर्थ है नर संबंधी ज्ञान। दोनों ही अर्थों से वे परमज्ञान के संरक्षक अर्थात स्वामी हैं। नारद जी के ज्ञान का दायरा कितना विस्तृत था, यह इस प्रसंग से परिलक्षित होता है कि जब वे अपने गुरू जी के पास ज्ञान प्राप्ति के लिये पहुंचे, तब गुरू जी ने उनकी प्रारम्भिक जानकारी के विषय में प्रश्न किया. नारद जी ने विनम्रता से एक लम्बी सूची गुरूजी के सम्मुख रख दी।

वर्ष : 18 अंक : 5

मातृवन्दना

वैशाख-ज्येष्ठ, कलियुगाब्द
5120, मई 2018

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा
सह-सम्पादक
वासुदेव शर्मा
सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर
डॉ॰ अर्चना गुलेरिया
नीतू वर्मा
पत्रिका प्रमुख
राजेन्द्र शर्मा
वितरण प्रमुख
जय सिंह ठाकुर
प्रबन्धक
महीधर प्रसाद

वार्षिक शुल्क
100 रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990
e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, PI-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादकः डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णतः अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

वंचित बन्धु राजनीतिक साजिश का शिकार न बनें ....

सत्ता की लालसा सामाजिक अन्तर्विरोधों की जन्मदात्री है। राजनीतिक दल सत्ताच्युत होने पर तत्काल ही इस प्रयास में जुट जाते हैं कि किसी भी प्रकार से हम सत्ता पुनः प्राप्त कर सकें। एक तो पहले से ही, उनकी पराजय का कारण बनी असन्तुष्ट आम जनता को पुनः अपनी ओर आकृष्ट करना राजनीति के दलों के लिए टेढ़ी खरी साबित होती है, दूसरे उनके पास कोई ऐसी आधिकारिक एवं आर्थिक शक्ति नहीं होती जिससे वे अपने मतदाताओं को दिए गए आश्वासनों को पूर्ण कर सके।

सम्पादकीय	वंचित बन्धु राजनीतिक साजिश	3
प्रेरक प्रसंग	बुद्धि का प्रयोग	4
चिंतन	निमार्णों के पावन युग में	5
आवरण	जातीय हित के नाम पर	6
संगठनम्	हिमाचल प्रदेश की सर्वाधिक	10
देश-प्रदेश	पदाधिकारी बदले, एजेंडा नहीं	12
देवभूमि	देवधरा करसोग	15
पुण्य जयंती	अमर बलिदानी: मुरारबाजी	17
संस्कृतम्	आईए! जानें	18
काव्य जगत	गिलहरी और स्मृति पदक	19
विविध	योग के डिप्लोमा धारक ले सकेंगे	21
कृषि	किसानों के लिए लाभकारी हो	22
स्वास्थ्य	लाखों की दवा- बहुगुणकारी बथुआ	23
महिला जगत	'राम सिंह' में दिखेंगी रामपुर	24
घूमती कलम	चीन ने भारत सीमा पर तैनात	25
प्रतिक्रिया	सोशल मीडिया का शरारती स्वरूप	26
विश्वदर्शन	अमेरिका में वार्षिक सूर्य नमस्कार	27
समसामयिकी	जहां पेड़ों को काटा नहीं पूजा जाता है	29
बाल जगत	सरकारी स्कूलों में बिना बैग जाएंगे बच्चे	31

सम्पादक महोदय,

मैं मातृवन्दना का पिछले कई वर्षों से नियमित पाठक हूं। एक बदलाव जो मुझे प्रभावित कर रहा कि अब कोई व्यक्ति हिन्दू कहे जाने पर बचाव की मुद्रा में नहीं आता अपितु इस पर स्वाभिमान दर्शाता है। वह हिन्दू की विशेषताएं गिनाता है उस पर हुए अत्याचारों की निंदा करता है। हिन्दू ने विश्व को क्या क्या दिया है वह उदहारण के साथ दर्शाता है। विश्व शांति के लिए हिन्दू संस्कृति कैसे लाभदायक है इस पर चर्चा करता है। योग पर स्वाभिमान दर्शाता है। अब वह समाज मे व्याप्त कुरीतियों की खुले तौर पर निंदा करता है और उस में सुधार की वकालत करता है। वह कहता है कि हिन्दू किसी विशेष पूजा पद्धति को मानने वाले नहीं है, जो भगवान् को नहीं मानते वह भी हिन्दू हैं, जो भगवान है कि नहीं पर चर्चा करता है वह भी हिन्दू है,जो मूर्ति पूजा विरोधी है वह भी हिन्दू है, जो नास्तिक है वह भी हिन्दू है। हिन्दू जीवन पद्धति है जो विश्व को सद्मार्ग दिखाती आयी है और विश्व में शांति स्थापित करने में सहायक होगी। ये भी ठीक है कि इस में कुछ कुरीतियां आ गयी हैं जिसे हम सब मिल कर दूर करेंगे परन्तु इतनी महान संस्कृति को नष्ट नहीं होने देंगे। कुछ विदेशी ताकतें भारत की बढ़ती ताकत को देख षडयंत्र कर हिन्दू को जाति, पंथ, भाषा, पूजा-पद्धति के आधार पर तोड़ना चाहती हैं। निरंतर प्रवाह करने वाली नदी में कभी-कभी प्रदूषण आ जाता है जिस के लिए प्रदूषण को ही दूर किया जाता है न की नदी को। मुझे विशवास है कि हम सत्य और कर्म कौशल के आधार पर सब के विश्वास को जीत कर सारे अवरोधों को दूर कर बुद्धिबल से शत्रु के षडयंत्र को नष्ट कर के हम हिन्दू संस्कृति की पताका विश्व में फहराएंगे। ❖ **अधिवक्ता बलराम शर्मा, शिमला**

महोदय,

मातृवन्दना विगत 24 वर्षो से प्रकाशित हो रही है। यह अति प्रसन्नता का विषय है। पत्रिका के माध्यम से समसामयिक विषयों सहित विभिन्न प्रकार की रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक जानकारियां पाठकों को मिलती रहती हैं। पिछले कई अवसरों पर पाठकों की प्रतिक्रिया ध्यान में लाई गई जिस पर मुझे लगता है कि सम्पादकीय मण्डल अवश्य विचार करेगा। अपने यहां शुभ कार्यों को करवाने के लिए उचित दिनदर्शिका न होने के कारण संभ्रम की स्थिति बनी रहती है। अत: अपनी पत्रिका में मास के विभिन्न पर्व त्यौहारों एवं शुभ मुहूर्तों की जानकारी भी प्रकाशित करें। ❖ **राकेश कुमार कुमारसैन, शिमला (हि.प्र.)**

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें

फोन न.: 0177-2836990
ई-मेल: matrivandanashimla@gmail.com

मई 2018 के शुभ लग्न

तिथि	समय	दिन	नक्षत्र
1 मई	15.57 से 29.43	मंगलवार	अनुराधा
2 मई	05.42 से 22.33	बुधवार	अनुराधा
5 मई	25.34 से 29.40	शनिवार	उत्तराषाढ़
6 मई	05.40 से 15.55	रविवार	उत्तराषाढ़
11 मई	13.47 से 29.36	शुक्रवार	उत्तर भाद्रपद
12 मई	05.36 से 29.35	शनिवार	उत्तर भाद्रपद

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को श्रमिक दिवस एवं देवर्षि नारद जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस (मई)

श्रमिक दिवस	01 मई
देवर्षि नारद जयंती	02 मई
अपरा एकादशी	11 मई
वट सावित्री व्रत	15 मई
अधिमास प्रारंभ	16 मई
गंगा दशहरा	24 मई
पुरूषोत्तम एकादशी	25 मई
पूर्णिमा	29 मई

वंचित बन्धु राजनीतिक साजिश का शिकार न बनें

सत्ता की लालसा सामाजिक अन्तर्विरोधों की जन्मदात्री है। राजनीतिक दल सत्ताच्युत होने पर तत्काल ही इस प्रयास में जुट जाते हैं कि किसी भी प्रकार से हम सत्ता पुन: प्राप्त कर सकें। एक तो पहले से ही, उनकी पराजय का कारण बनी असन्तुष्ट आम जनता को पुन: अपनी ओर आकृष्ट करना राजनीतिक दलों के लिए टेढ़ी खीर साबित होती है, दूसरे उनके पास कोई ऐसी आधिकारिक एवं आर्थिक शक्ति नहीं होती जिससे वे अपने मतदाताओं को दिए गए आश्वासनों को पूर्ण कर सकें। अतएव उन्हें केवल दो ही उपाय सूझते हैं। पहला सत्ताधारी दल की कमजोरियों को उजागर करना, दूसरा विभिन्न समुदायों अथवा वर्गों के मध्य फूट के बीज बोना। वर्तमान में भी यही सब कुछ घटित हो रहा है। राष्ट्रीयता की मूल भावना को चोट पहुंचा कर ये राजनीतिक दल विभिन्न समुदायों की भावनाओं को भड़का रहे हैं और उन्हें भ्रमित एवं उद्वेलित कर पारस्परिक एकता को विनष्ट कर रहे हैं। विगत मास एससी/एसटी एक्ट पर सुप्रीम कोर्ट के निर्णय को लेकर कुछ संगठनों द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से आयोजित भारत बंद पर उपर्युक्त वातावरण प्रत्यक्ष रूपेण देखने को मिला। इस आंदोलन में विपक्षी दलों के सम्मिलित होने से यह स्पष्ट हो गया कि इस आंदोलन के पीछे किन-किन दलों का हाथ है?

किसी न किसी अन्याय या अत्याचार के विरोध में जातीय आंदोलन व विरोध प्रदर्शन प्राय: देश में होते रहते हैं, जिनमें आम जनता भी उनका साथ देती है किन्तु उनका हिंसक इतिहास कभी नहीं रहा। इस बार भारत बंद के दौरान भड़की हिंसा के पीछे नि:सन्देह दलगत राजनीतिक षड्यन्त्र ही दृष्टिगोचर होता है। एससी/एसटी एक्ट में सुप्रीम कोर्ट के निर्णय को सरकार के दबाव में लिया गया निर्णय बता कर विपक्ष विभिन्न जातीय वर्गों को उकसा रहा है और राजनीतिक रोटियां सेंकने का प्रयास कर रहा है। वास्तव में न्यायपालिका द्वारा यह स्वयं का लिया गया निर्णय है। सरकार ने तो इस एक्ट के संशोधन के सम्बन्ध में पुनर्विचार याचिका भी दायर कर दी थी। सत्य तो यह है कि देश में जाति-मत-सम्प्रदाय की राजनीति एक हकीकत बन चुकी है। अपनी जाति के हित के मामले में कोई भी राजनीतिक दल ईमानदार नहीं है। सबकी रुचि केवल वोट हासिल करने में है। जातियों के नेताओं अथवा तथा कथित हितैषी नेताओं की कमी नहीं किन्तु ऐसे नेता बमुश्किल मिलते हैं जो उनकी आकांक्षाओं की पूर्ति में और अपेक्षाओं में खरे उतरते हों। ऐसे जातिवादी नेताओं की संख्या अधिक है जिन्हें अपने पिछड़े समाज की चिंता से अधिक निजि स्वार्थ की चिंता बनी रहती है। शोषित वर्ग उतरोत्तर राजनीतिक साजिश का शिकार बनता जा रहा है।

शोषित वर्ग और शेष समाज के भेद को समाप्त करने के लिए केवल कानून का आश्रय लेना काफी नहीं। इसके लिए एक प्रभावशाली जनान्दोलन की आवश्यकता है जिससे समाज में समरसता बढ़ाने के लिए कारगर उपायों का क्रियान्वयन हो सके। करोड़ों लोगों में जातीय-उपनामों को हटाने का प्रयास हो, अस्पृश्यता को मिटाने का सामूहिक प्रयास हो, विजातीय विवाहों को प्रोत्साहन मिले, घर-मंदिरों में हर जाति वर्ग का प्रवेश सुलभ हो और जातीय आरक्षण पर पुन: विचार हेतु शोषित एवं पिछड़ी जातियों की सहमति बनायी जाए। ऐसे जनान्दोलनों से ही शोषित वर्ग और शेष समाज में परस्पर सद्भावना का प्रसार हो सकता है और देश की एकता को बल मिल सकता है। इन जनान्दोलनों में अग्रिम भूमिका सभी की हो यह आवश्यक है। अपनी कुशलताओं व क्षमताओं के विकास को अधिमान देने की बजाय हम स्वार्थी राजनीतिक दलों की बांटो और राज करो की नीति की घृणित एवं नफरत भरी राजनीति में उलझ कर रह गए हैं। पारस्परिक मधुर सम्बन्धों को तोड़कर हम सत्ता लोलुप राजनेताओं के हाथों की कठपुतलियां बन कर रह गए हैं। संगठित सार्मथ्य बल से इनको करारा जबाब दिया जा सकता है। इस हेतु हमें शीघ्र सम्पूर्ण समाज को अन्तर्विरोधों से मुक्त कर विकास पथ पर आगे बढ़ाना होगा।

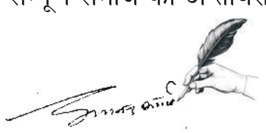

बुद्धि का प्रयोग

एक समय की बात है कि एक शिष्य ने गुरू से पूछा ''गुरू जी, सभी प्राणी जन्म लेते हैं और मरते हैं। इस जगत के सभी प्राणी चाहे वे जीव जंतु हों अथवा मनुष्य, सभी में भूख, पीड़ा, हर्ष आदि के भाव प्रकट करने की क्षमता है। सभी अपना बचाव करना भी जानते हैं। सभी को बीमारी से भी जूझना पड़ता है। पशु-पक्षी, जीव जन्तु मनुष्य सभी का अंत निश्चित है लेकिन क्या कारण है कि केवल मनुष्यों में ही साधु, तपस्वी, ज्ञानी, चोर, डाकू, लुटेरे, आंतकवादी, वहशी, दरिंदे आदि होते हैं और मनुष्य में ही भांति-भांति की जातियां और धर्म क्यों होते हैं? शिष्य का प्रश्न सुन कर गुरूजी मुस्कुराकर बोले तुमने बहुत ही अच्छा प्रश्न पूछा है। वास्तव में इसके पीछे प्रमुख कारण व्यक्ति के अन्दर बुद्धि का होना, बुद्धि के कारण ही मनुष्य, मनुष्य हो सकते हैं। जो पशु जीव जन्तु आदि नहीं हो सकते वे पीड़ित, ज्ञानी, तपस्वी, चोर, लुटेरे, आतंकवादी भी हो सकते हैं। किन्तु मनुष्य अपनी बुद्धि का सार्थक प्रयोग न करने की वजह से भूल जाता है। और गलत कार्य के वशीभूत अपने जीवन को बरबाद कर अपनी बुद्धि का सही दिशा में ही प्रयोग न कर विनाश की ओर चला जाता है। इस बुद्धि का सही दिशा में ही पयोग करना चाहिए। बुद्धि का प्रयोग करके मनुष्य ने स्वयं को एकता के सूत्र में बांधने की जगह धर्मों, जातियों और विभिन्न पेशों में बांट लिया है तथा असंख्य विवादों को जन्म दिया है। यदि मनुष्य चाहता तो वह अपनी बुद्धि का प्रयोग करके सारी मनुष्य जाति को एकता के सूत्र में बांध कर अपना जीवन सार्थक व सफल बना सकता था। किन्तु उसने ऐसा नहीं किया। यदि अभी भी मनुष्य अपनी बुद्धि का प्रयोग अच्छे व नेक कार्यों में करे तो वह जीवन को कामयाब बना सकता है जो कि जीव जगत के अन्य प्राणी नहीं कर सकते। जैसे बिल्ली का जूठा दूध हम पी सकते हैं। कुत्ते को साथ बिस्तर में सुला सकते हैं तो जाति व मनुष्य में क्या लगा है। शिष्य को गुरू की बात से समझ में आ गई। ❖ **अमर चंद, धुन्दन, सोलन**

अलौकिक प्रतिभा आदि शंकराचार्य

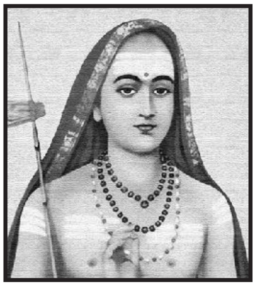

आदि शंकारचार्य प्रकाण्ड पांडित्य, प्रचंड कर्मशीलता के धनी थे। आज से करीब ढाई हजार वर्ष पहले वैशाख शुक्ल पंचमी को उनका अवतरण हुआ था। हिंदू धर्म की ध्वजा को देश के चारों कोनों में फहराने वाले और भगवान शिव के अवतार आदि शंकराचार्य की जयंती इस बार 20 अप्रैल को मनाई गई।

असाधारण प्रतिभा के धनी आद्य जगद्गुरु शंकराचार्य ने शैशव काल में ही संकेत दे दिया कि वे सामान्य बालक नहीं है। जब वह मात्र तीन साल के थे तब पिता का देहांत हो गया। सम्पूर्ण देश में चार मठ स्थापित कर आदि शंकराचार्य ने फूंके थे सनातन धर्म में प्राण। आदि शंकराचार्य को महज 2 वर्ष की आयु में इन्हें कंठस्थ थे वेदांत। तीन साल की उम्र में ही उन्हें मलयालम का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। सात वर्ष के हुए तो वेदों के विद्वान, 12 वर्ष में सर्वशास्त्र पारंगत और 16 वर्ष में ब्रह्मसूत्र-भाष्य रच दिया।

16 वर्ष की अवस्था में 100 से भी अधिक ग्रंथों की रचना कर चुके थे। बाद में माता की आज्ञा से वैराग्य धारण कर लिया था। मात्र 32 साल की उम्र में केदारनाथ में उनकी मृत्यु हो गई। लुप्त हो रहे सनातन धर्म की पुनर्स्थापना, तीन बार भारत भ्रमण, शास्त्रार्थ, दिग्विजय, भारत के चारों कोनों में चार मठों की स्थापना, चारों कुंभों की व्यवस्था, वेदांत दर्शन के शुद्धाद्वैत संप्रदाय के शाश्वत जागरण के लिए दशनामी नागा संन्यासी अखाड़ों की स्थापना, पंचदेव पूजा प्रतिपादन को उन्होंने प्रारम्भ करवाया था। वह कहते थे 'सबसे उत्तम तीर्थ आपका मन है, जो विशेष रूप से शुद्ध किया गया हो।'

यह मोह से भरा संसार सपने की तरह है। यह तब तक ही होता है, जब तक व्यक्ति अज्ञान रूपी निद्रा में सोया होता है। सत्य की परिभाषा है, जो सदा था, सदा है और सदा रहेगा। जैसे दीपक को चमकाने के लिए दूसरे दीपक की जरूरत नहीं होती। वैसे ही आत्मा भी स्वयं ज्ञान का स्वरूप है, उसे और किसी के ज्ञान की जरूरत नहीं होती। ❖

निमार्णों के पावन युग में हम चरित्र निर्माण न भूलें

-डॉ. जगदीश गांधी

ऐसा लगता है कि समाज में शैतानी असभ्यता बढ़ती ही जा रही है। चारित्रिक, नैतिकता, कानून का सम्मान व जीवन मूल्यों की शिक्षा के अभाव में कुछ लोग आज राह भटक गये हैं, यही कारण है कि समाज में आए दिन महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध, चोरी, हत्या व भ्रष्टाचार आदि जैसी घटनाएं पढ़ने-सुनने को मिल रही हैं। जीवन में 'मन' एक खेत की तरह है तथा 'विचार' बीज की तरह हैं। जीवन व चित्त रूपी भूमि में हम परिवार, विद्यालय तथा समाज के वातावरण के द्वारा बालक के मन में जैसे विचारों का बीजारोपण करते हैं वैसे ही विचारों, चरित्र और आचरण का बालमन बन जाता है।

बच्चों को भौतिक के साथ ही सामाजिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा भी दें-

मनुष्य एक 'भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक' प्राणी है। जब से परमात्मा ने यह सृष्टि और मानव प्राणी बनाए तब से परमात्मा ने उसकी तीन वास्तविकताओं भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक के साथ उसे एक संतुलित प्राणी के रूप में निर्मित किया है। अतः परिवारों और विद्यालयों के द्वारा बालकों को भौतिक, मानवीय एवं आध्यात्मिक अर्थात् तीनों प्रकार की शिक्षाओं का संतुलित ज्ञान कराना चाहिए।

परिवार, विद्यालय तथा समाज से मिली शिक्षा ही मनुष्य का चरित्र निर्मित करते हैं-

मनुष्य के तीन चरित्र होते हैं। पहला चरित्र प्रभु प्रदत्त, दूसरा माता-पिता के जीन्स वंशानुकूल से प्राप्त चरित्र तथा तीसरा परिवार, स्कूल तथा समाज से मिले वातावरण से विकसित या अर्जित चरित्र। इसमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण चरित्र तीसरा अर्थात् 'अर्जित चरित्र' होता है। इस अर्जित चरित्र का निर्माण बालक को परिवार, विद्यालय व समाज में मिले गुण व अवगुण पर निर्भर करता है। उसे जिस प्रकार की शिक्षा परिवार, विद्यालय तथा समाज से मिलती है वैसा ही उसका चरित्र निर्माण हो जाता है। वास्तव में बच्चों का भविष्य इन्हीं तीन क्लास रूमों 'परिवार, विद्यालय तथा समाज' में ही गढ़ा जाता है।

बच्चे को संवेदनशील बनाते हुए उसमें ईश्वर भक्ति बढ़ायें-

जब कोई बच्चा इस पृथ्वी पर जन्म लेता है उस समय उसके मन-मस्तिष्क एवं हृदय पूरी तरह से पवित्र एवं दयालु होता है, किन्तु कालान्तर में वह परिवार में रहते हुए जैसा देखता व सुनता है, स्कूल में जैसी उसे शिक्षा दी जाती है तथा समाज में रहते हुए लोगों का जैसा अच्छा या बुरा व्यवहार देखता है वैसा ही अच्छे या बुरे चरित्र का वह बन जाता है। इसलिए इस प्रकार की घटनाओं को रोकने के लिए घर, स्कूल तथा समाज तीनों को ही प्रयास करके प्रत्येक बच्चे में संवेदनशीलता, नैतिकता, चारित्रिकता तथा ईश्वर भक्ति के गुणों को बाल्यावस्था से बढ़ाना चाहिए। इसके साथ ही समाज में बढ़ते हुए अपराधों के लिए सिनेमा घरों, व टी.वी. चैनल्स में दिखाई जाने वाली गंदी फिल्मों, इन्टरनेट पर उपलब्ध अश्लील साइटों, समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले नकारात्मक समाचारों, प्रकाशित अश्लील विज्ञापनों व फोटो पर रोक लगाने के लिए सरकार को तत्काल साइबर लॉ जैसे प्रभावशाली कानूनों से अपनी कानून व्यवस्था को लैस करना चाहिए।

भावी पीढ़ी में जीवन-मूल्यों, चारित्रिक उत्कृष्टता व नैतिक विचारों का समावेश करें-

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि -'सच्ची शिक्षा वह है जिसे पाकर मनुष्य अपने शरीर, मन और आत्मा के उत्तम गुणों का सर्वांगीण विकास कर सके। उसे प्रयोग में ला सके।' परिवार, विद्यालय व समाज अज्ञानतावश बालक में जन्म से निहित इन तीन ईश्वरीय गुणों को निखारने-संवारने पर महत्व नहीं देते हैं। देश में घटित रेप, हत्या, लूटपाट जैसी दुर्घटनायें समाज के प्रत्येक नागरिक को झकझोरती व आंदोलित करती हैं और साथ ही यह सोचने के लिए भी मजबूर करती हैं कि आखिर कब तक हम ऐसी घटनाओं को सहन करते रहेंगे। इसके लिए अभी से सचेत होना होगा और भावी पीढ़ी में बाल्यावस्था से ही चारित्रिक उत्कृष्टता को विकसित करने हेतु संकल्पित होना होगा, तभी समाज में फैली हुई इन बुराइयों पर रोक संभव है। एक बहुत ही प्रेरणादायी गीत है-निर्माणों के पावन युग में हम चरित्रनिर्माण ना भूले। इसलिए आइये, विद्यालय के साथ मिलकर परिवार व समाज के सभी लोग आज की बाल एवं युवा पीढ़ी के चरित्र निर्माण का संकल्प लें। ❖ **लेखक प्रसिद्ध शिक्षाविद्, संस्थापक-प्रबन्धक, सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ हैं।**

जातीय हित के नाम पर दुष्प्रचार

-डॉ. उमेश पाठक

डॉ. भीमराव आंबेडकर ने 25 नवंबर, 1949 को संविधान सभा में 'अराजकता का व्याकरण' नाम से प्रसिद्ध अपने संबोधन में कहा था कि 'अगर भारत में लोकतंत्र बरकरार रखना है न केवल प्रपत्र में, बल्कि वास्तव में भी, तो हमें क्या करना चाहिए?मेरे विचार से सबसे पहले हमें अपने सामाजिक और आर्थिक उद्देश्यों को हासिल करने के लिए संवैधानिक तरीकों पर अडिग रहना होगा। इसका मतलब हमें हिंसक क्रांति के तरीके को त्यागना होगा। इसका मतलब है हमें सविनय अवज्ञा, असहयोग आंदोलन और सत्याग्रह के रास्ते को भी त्यागना होगा। ब्रिटिश हुकूमत के दौर में जब कोई भी संवैधानिक तरीकों के पक्ष में थे, परंतु जब संवैधानिक रास्ते खुले हैं तो इस तरह के असंवैधानिक तरीकों की कोई तार्किकता नहीं रह जाती है, क्योंकि ये तरीके और कुछ नहीं, बल्कि अराजकता का व्याकरण हैं जिसे हम जितनी शीघ्रता से त्याग दें उतना ही हमारे लिए बेहतर है।'

बीते 2 अप्रैल को विभिन्न दलित संगठनों द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से बुलाए गए भारत बंद में हुई हिंसा और अराजकता डॉ. आंबेडकर द्वारा व्यक्त की गई आशंका की पुष्टि करती है। भारत में दलित आंदोलन और विरोध प्रदर्शन का लंबा सिलसिला रहा है, लेकिन अपने व्यापक स्तर के बावजूद उनका हिंसक इतिहास नहीं रहा है। भारत बंद के दौरान की अराजकता इस आशंका को भी बल देती है कि साजिश के तहत हिंसा को भड़काया गया।

खासतौर पर तब जब आखिरी वक्त पर इसमें सभी राजनीतिक दल कूद पड़ें, लेकिन आरोप-प्रत्यारोप से परे भी प्रदर्शन के कारणों को देखने की जरूरत है। एससी-एसटी एक्ट पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर भारत बंद बुलाने के पीछे जो कारण बताए गए थे उनमें एक आरोप की शक्ल में यह है कि सरकार एससी/एसटी अधिनियम को बदल कर निष्प्रभावी बना रही है, आरक्षण खत्म कर रही है और दलितों पर अत्याचार बढ़ रहे हैं, लेकिन तथ्यों पर एक नजर ही यह दिखाने के लिए काफी है कि ये आरोप बेहद ही कमजोर किस्म के हैं। हाल में ऐसे जितने भी निर्णय आए हैं, चाहे वह शिक्षण संस्थानों में विभागीय आधार पर आरक्षण का रोस्टर बनाने का हो, जिससे आरक्षित सीटें कम हो रही हैं या फिर एससी/एसटी अधिनियम का फैसला हो, उनमें से एक भी सरकार का नहीं, बल्कि अदालतों का है। सरकार ने इन दोनों फैसलों का विरोध किया है। अब ऐसा कहना केवल कपोल कल्पना ही हो सकती है कि चूंकि भारतीय जनता पार्टी सत्ता में है इसलिए वह खुद नहीं, बल्कि अदालतों के माध्यम से यह सब कर रही है। यह छल-कपट से बुनी गई कहानी है। यदि अदालतों और सरकार की इतनी ही पटरी बैठ रही होती तो फिर आधार जैसे अनेक मामलों में सरकार को इतना दम-खम नहीं लगाना पड़ रहा होता। एनजेएसी यानी राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग को सुपीम कोर्ट द्वारा सिरे से खारिज किए जाने से यह और अच्छे से पता चल जाता है कि सरकार और न्यायपालिका के संबंध कैसे हैं। इसके अलावा अगर सरकार का ट्रैक रिकॉर्ड भी देखा जाए तो ये आरोप कमजोर ही लगते हैं। भाजपा सरकार ने ही आरक्षण के पक्ष में 81, 82 और 85वां संविधान संशोधन किया था जो एससी/एसटी की बैकलॉग सीटों को भरे जाने, भर्ती के मापदंड में छूट और पदोन्नति में आरक्षण को लेकर थे। समाजवादी पार्टी शायद यह बताएगी कि कैसे उसने एससी/एसटी की पदोन्नति में

आरक्षण का विरोध किया था और संसद में किसने इससे संबंधित बिल फाड़ा था? क्या किसी से यह छिपा है कि अखिलेश यादव के कार्यकाल में आरक्षण का विरोध किया था और संसद में किसने इससे संबंधित बिल पाड़ा था? क्या किसी से यह छिपा है कि अखिलेश यादव के कार्यकाल में कुछ अधिकारियों की सुप्रीम कोर्ट के 2012 के निर्णय के बाद किस प्रकार पदावनति की गई थी। अदालत के निर्णय की आड़ लेकर दलित जाति के उन अधिकारियों को भी उठाकर नीचे फेंक दिया गया था जो बिना आरक्षण भी पदोन्नति के काबिल थे और अर्हताओं को पूरा करते थे।

सोशल मीडिया पर लंबे-लंबे संदेश लिखने वाले यह बताना भूल रहे हैं कि मोदी सरकार ने ही एससी/एसटी अधिनियम को 2015 में संशोधित कर उसे और प्रभावी बनाने का काम किया है। इसी सरकार ने मुआवजा बढ़ाने के साथ ही जिला स्तर पर विशेष अदालतों की स्थापना की, जिनके लिए दो महीनों में निर्णय देना अनिवार्य बनाया गया है। बढ़ते अपराधों के आंकड़े दिखाकर जो बयानबाजी हो रही है उसमें यह नहीं बताया जा रहा है कि 2015 के संशोधन के चलते अब पहले से अधिक अपराधों को एससी/एसटी अधिनियम के अंतर्गत लाया जा रहा है। इसके कारण जो अपराध पहले दर्ज नहीं होते थे वे भी अब दर्ज हो रहे हैं। क्या मायावती यह बताएंगी कि अपने पिछले कार्यकाल में उन्होंने एससी/एसटी अधिनियम को खुद कमजोर क्यों किया था और यह निर्देश क्यों दिया था कि सिर्फ हत्या और दुष्कर्म के मामले ही इस अधिनियम के अंतर्गत दर्ज होंगे और वे भी प्रारंभिक जांच के बाद ही? ऐसा लगता है कि सोशल मीडिया पर तथ्यहीन शोर मचाने वाले शायद यह सब बताना जानबूझकर भूल गए। एससी/एसटी अधिनियम पर भी सरकार ने आरंभ में ही कह दिया था कि वह पुनर्विचार याचिका दायर करेगी और मात्र चार-पांच कार्य दिवस में कर भी दिया। उपद्रव को सही बताने वाले क्या यह बताएंगे कि वह इससे अधिक तेजी से क्या कर लेते? दरअसल भारत बंद के दौरान जो कुछ हुआ वह सिर्फ 2019 के लिए 'माहौल' बनाने का खेल है। कभी इंदिरा हटाओ की तरह ही आज मोदी हटाओ की मुहिम में विपक्ष कुछ भी करने पर आमादा हो गया है। बिना किसी तथ्य और साक्ष्य के सोशल मीडिया और खासतौर पर कुछ खास वेबसाइटों के सहारे बेहद ही खतरनाक दुष्प्रचार चला। इसका नतीजा क्या हुआ और कितने लोगों की जान गई, इसकी भीड़ को भड़काने वालों को कोई परवाह नहीं है। चाहे पटेल आंदोलन हो, जाट आंदोलन हो, मराठा आंदोलन हो, करणी सेना का उपद्रव हो या फिर अब जातीय प्रदर्शन, सबका पैटर्न एक जैसा ही प्रतीत होता है। ऐसे पैटर्न के बीच यह निर्णय जनता को ही करना है कि क्या वह डॉ. आंबेडकर के 'अराजकता का व्याकरण' वाली चेतावनी को मानेगी या फिर सोशल मीडिया पर चलने वाली फर्जी खबरों और दुष्प्रचार को?आरक्षण हो या सामाजिक न्याय की लड़ाई या फिर अन्य मुद्दे, उन्हें लेकर जो संघर्ष और सामाजिक खींचतान है वह भाजपा, कांग्रेस इत्यादि के परे है। इसीलिए आंबेडकर ने इन मुद्दों के लिए संवैधानिक तरीकों की वकालत की थी न कि सड़कों पर उतरकर उपद्रव की। ❖

SHIVALIK HOSPITAL
Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob.: 98059-33644
Dr. Akshay Sharma
MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi
Dr. Anupma Sharma
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190
Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

सामाजिक विभाजन का कारण न बने Sc & ST Act

-राकेश सैन

भारतीय समाज की विडंबना ही है कि अनुसूचित जाति जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम की 21वीं सदी में भी जरूरत पड़ रही है। लगभग सात दशक पहले संविधान में दिए गए समानता के अधिकार के बाद भी देश में जाति आधारित भेदभाव समाप्त होने का नाम नहीं ले रहा। इस तस्वीर का दूसरा पहलु भी है, वंचितों व शोषितों को बचाने के लिए बनाए गए कानूनों का दुरुपयोग भी हो रहा है। समाज को जोड़ने के उद्देश्य से लाए गए कानून उसी समाज को बांटते दिखने लगे हैं। इस बात के पक्ष में दो उदाहरण दिए जा सकते हैं। धिनरूआ पुलिस ने 2017 में दो दंगाईयों को गिरफ्तार किया। इस हंगामे को कराने में मसौढ़ी की विधायक रेखा देवी के खिलाफ भी मामला दर्ज किया गया। इस पर विधायक ने मसौढ़ी डीएसपी सुरेंद्र कुमार पंजियार के खिलाफ जातिसूचक शब्दों का प्रयोग करने की प्राथमिकी दर्ज करा दी। इससे पुलिस प्रशासन में खलबली मच गई लेकिन आरोपों की जांच की गयी, तो गलत मिले। दूसरी ओर वंचित व शोषित वर्गों पर हर रोज कहीं न कहीं उत्पीड़न की खबरें सुनने व पढ़ने को मिल जाती हैं। इससे साफ है कि एससी/एसटी एक्ट की आवश्यकता पहले जितनी ही है परंतु जरूरत है इसका दुरुपयोग रोकने की, जिस तरफ एक सकारात्मक कदम देश की सर्वोच्च अदालत ने उठाया है। अदालत के इस फैसले से उक्त एक्ट और मजबूत व प्रभावी बनने वाला है।

महाराष्ट्र के सरकारी अधिकारियों के खिलाफ उक्त कानून के दुरुपयोग पर विचार करते हुए न्यायालय ने आदेश दिया कि इसके तहत दर्ज ऐसे मामलों में फौरन गिरफ्तारी नहीं होनी चाहिए। न्यायमूर्ति आदर्श गोयल और यूयू ललित की पीठ ने कहा कि किसी भी लोकसेवक की गिरफ्तारी से पहले न्यूनतम पुलिस उपाधीक्षक रैंक के अधिकारी द्वारा प्राथमिक जांच जरूर होनी चाहिए। लोक सेवकों के खिलाफ दर्ज मामलों में अग्रिम जमानत देने पर कोई पूर्ण प्रतिबंध नहीं है। इसके तहत दर्ज मामलों में सक्षम अधिकारी की अनुमति के बाद ही किसी लोक सेवक को गिरफ्तार किया जा सकता है। सन् 1989 में इस कानून को एक खास जरूरत के कारण बनाया गया था। सन् 1955 के प्रोटेक्शन ऑफ सिविल राइट्स एक्ट के बावजूद न तो छुआछूत का अंत हुआ और न ही वंचितों पर अत्याचार रुके। देश की चौथाई आबादी इन समुदायों से बनती है और आजादी के इतने साल बाद भी उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति तमाम मानकों पर बेहद खराब है। इस अधिनियम के तहत अनुसूचित वर्गों के विरुद्ध किए जाने वाले नए अपराधियों में जूते की माला पहनाना, उन्हें सिंचाई सुविधाओं तक जाने से रोकना या वन अधिकारों से वंचित रखना, मानव और पशु कंकाल को निपटाने, कब्र खोदने के लिए बाध्य करना, सिर पर मैला ढोने की प्रथा का उपयोग और अनुमति, इन वर्गों की महिलाओं को देवदासी के रूप में समर्पित करना, जाति सूचक गाली देना, जादू-टोना अत्याचार को बढ़ावा देना, सामाजिक और आर्थिक बहिष्कार करना, चुनाव लड़ने से रोकना, महिलाओं का वस्त्र हरण करना, किसी को घर, गांव और आवास छोड़ने के लिए बाध्य करना, धर्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाना, यौन दुर्व्यवहार करना आदि दंडनीय अपराध हैं।

इसमें कोई दो राय नहीं कि इस कानून से वंचित व शोषित समाज को सम्मान के साथ जीने में बहुत बड़ा सहारा मिला है और उत्पीड़न की घटनाओं पर विराम लगाने में काफी मदद भी मिली परंतु वर्तमान में देखने में यह आने लगा कि यह कानून अन्य वर्ग के लोगों के उत्पीड़न व ब्लैकमेलिंग का हथियार भी बनने लगा। सर्वोच्च न्यायालय के सम्मुख महाराष्ट्र से आए केस से ही साफ हो जाता है कि कुछ गलत मानसिकता के लोग इसका दुरुपयोग समाज को

बांटने व लोगों को डराने में कर रहे हैं। राज्य के दो अधिकारियों ने अनुसूचित वर्ग के एक कर्मचारी के काम पर प्रशासनिक टिप्पणी की, जिस पर कर्मचारी ने अपने वरिष्ठों पर इस एक्ट की शिकायत दर्ज करवा दी। यह केवल महाराष्ट्र का मामला नहीं है, सामान्यत: सरकारी दफ्तरों में देखा जाता है कि कोई अधिकारी अपने जूनियर कर्मचारियों को उनके कामकाज के बारे में कहने से भी कतराते हैं कि कहीं उसके खिलाफ इस तरह की शिकायत न कर दे। यह क्रम यूं ही चलता रहा तो हमारा प्रशासनिक ढांचा कितनी देर तक ठहर पाएगा। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो 'एनसीआरबी' की रिपोर्ट के अनुसार, इस एक्ट के तहत दर्ज होने वाले 16 प्रतिशत केस आरंभ में ही बंद हो जाते हैं और 75 प्रतिशत केसों में या तो आरोपी छूट जाते हैं या बाहर ही समझौता हो जाता है। अंतत: बड़ी मुश्किल से 2.4 प्रतिशत केसों में ही किसी को सजा हो पाती है। इसके दो अर्थ निकाले जा सकते हैं, एक या तो कानून लागू करने वाली एजेंसियां अपना काम सही तरीके से नहीं करतीं दूसरा कि इस तरह की अधिकतम शिकायतें झूठी होती हैं।

सर्वोच्च न्यायालय ने जो व्यवस्था दी है उससे इन दोनों कारणों से छुटकारा मिलने वाला है। डीएसपी स्तर के सक्षम अधिकारी द्वारा केस फाइल करने से जहां केस में तथ्यात्मक मजबूती आएगी वहीं प्रारंभिक जांच में झूठी शिकायतें स्वत: निरस्त हो जाएंगी। जहां तक आरोपी को अग्रिम जमानत देने की बात है वह उसका संवैधानिक अधिकार है। जमानत जब हत्या व बलात्कार जैसे गंभीर अपराधों में दी जा सकती है तो इस कानून में क्यों नहीं मिलनी चाहिए? न्यायालय के निर्णय पर बेवजह हल्ला मचाने वालों को समझना चाहिए कि किसी कानून को समाप्त नहीं किया गया बल्कि यह सामयिक सुधार का प्रयास है। हर कानून में समय-समय तात्कालिक जरूरतों के अनुसार बदलाव व सुधार हुए हैं। अदालत के इस कदम से जहां इस कानून को लेकर समाज में भय का वातावरण समाप्त होगा वहीं यह और भी प्रभावी रूप में सामने आएगा। वंचितों व शोषितों की उन सच्ची व वाजिब शिकायतों का निपटारा होगा जो आज फर्जी केसों के बीच दबी कराह रही हैं। ❖

तिरूपति मंदिर में नियुक्त हुए अनु.जाति/जनजाति के 330 पुरोहित

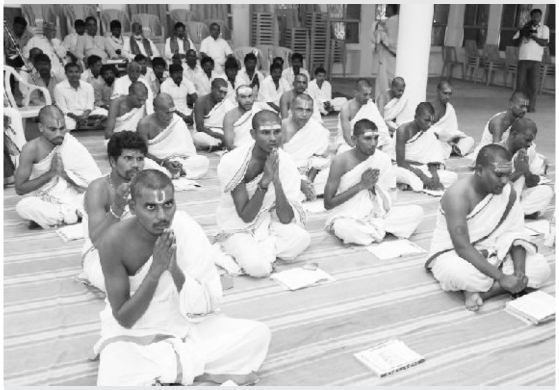

हैदराबाद के श्री रंगनाथ मंदिर की 2700 वर्ष पुरानी परंपरा पुन: आरम्भ की गई। इस प्राचीन परंपरा के अनुसार तत्कालीन समय में जो 'अस्पृश्य' (जाति नहीं) के लोग मंदिरों में आने से कतराते थे, उन्हें मंदिर के मुख्य पुजारी अपने कंधो पर बैठाकर गर्भगृह में ले जाते थे।

इसी परंपरा को पुन: आरम्भ किया गया है हैदराबाद के श्री रंगनाथ मंदिर के मुख्य पुजारी श्री सीएएस रंगराजन, मंदिर के एक अनुसूचित भक्त आदित्य परास्री को अपने कंधों पर बैठाकर गर्भगृह में ले गए। इसी क्रम में तिरूपति तिरूमला देवस्थानम् बोर्ड ने प्रशिक्षण देकर आंध्र प्रदेश के दूरस्थ स्थानों से चयनित 330 अनुसूचित जाति/जनजाति के अभ्यर्थियों को पुरोहित नियुक्त किया है। यह अपने आप में सम्पूर्ण हिन्दु समाज के लिए एक सराहनीय प्रयास है।

अब सवाल ये उठता है कि आज से 2700 वर्ष पहले जब कर्म के अनुसार 'अस्पृश्य' (जाति नहीं) के लोगों को ब्राह्मणों द्वारा कंधों पर बैठाकर ऐसी परंपरा चलाई जाती थी, तो बीच के इस कालखंड में 'वर्ण-व्यवस्था' छोड़कर भारत में 'जाति प्रथा' किसने शुरू की, किसने इसे आग और हवा दी (आज भी चर्च के पाले-पोसे बुद्धिपिशाच ये काम कर ही रहे हैं)?? - जरा सोचिये... ❖ **ई- मेल से प्राप्त**

हिमाचल प्रदेश की सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी मासिक पत्रिका मातृवन्दना

मातृवन्दना अपने शैशवकाल से ही नियमित प्रकाशित हो रही है। इस वर्ष 25 वें वर्ष में प्रवेश करने पर रजत जयंती के अवसर पर हिमाचल गौरव विशेषांक एवं कैलेंडर अनावरण कार्यक्रम शिमला के ऐतिहासिक गेयटी थिएटर में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मंच पर माननीय नरेन्द्र ठाकुर अखिल भारतीय सहप्रचार प्रमुख, रा. स्व.सं., वरिष्ठ पत्रकार अशोक मलिक, पीके कंस्ट्रक्शन्स प्रा. लिमिटेड के एमडी प्रमोद कुमार सूद एवं मातृवन्दना संस्थान के अध्यक्ष अजय कुमार सूद उपस्थित रहे। कार्यक्रम का प्रारम्भ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। राजकीय कन्या वरिष्ठ विद्यालय पोर्टमोर की छात्राओं ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। मातृवन्दना संस्थान की उपाध्यक्षा मीनाक्षी सूद ने मंच संचालन किया जबकि संस्थान सदस्या डॉ. अर्चना गुलेरिया ने कार्यक्रम में उपस्थित विशिष्ट अतिथियों का परिचय कराया। पत्रिका के सम्पादक डॉ. दयानन्द शर्मा ने हिमाचल गौरव विशेषांक की भूमिका पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम अध्यक्ष पीके सूद ने मातृवन्दना संस्थान के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस अवसर पर पत्रिका के प्रसार में लम्बे समय ये जुड़े व अधिकतम सदस्यता करने वाले कार्यकर्ताओं को भी पुरस्कृत किया गया। इसमें मुख्य रूप से श्रीमती कमलेश शर्मा, जमनादास अग्निहोत्री, अनुज पंत, शशिकांत शर्मा व कुलदीप शौरी को पुरस्कृत किया गया।

नूरपर में बस दुर्घटना में काल के ग्रास बने मृतक बच्चों को श्रद्धांजलि भी दी गई। वरिष्ठ पत्रकार व दैनिक ट्रिब्यून के रेजिडेंट एडिटर अशोक मलिक ने मातृवन्दना पत्रिका में प्रकाशित स्थानीय व दूरस्थ क्षेत्रों के समाचारों के विषय में कहा कि जहां प्रिंट व इलैक्ट्रॉनिक मीडिया कुछ समाचारों को छुपा देते हैं या प्रकाशित नहीं करते वहां मातृवन्दना सच्चाई को उजागर कर दुनिया के सामने लाती है यह प्रशंसनीय है। मुख्य वक्ता नरेन्द्र कुमार ने हिमाचल गौरव विशेषांक की विषय वस्तु के चयन और कैलेंडर के प्रकाशन की प्रशंसा की, साथ ही साथ उन्होंने मातृवन्दना के प्रसार में प्रारंभ से लगे प्रतिनिधियों के प्रयास को भी सराहा। उन्होंने मातृवन्दना की संपादकीय टोली व संस्थान के सदस्यों को भी पत्रिका प्रकाशन के अवसर पर बधाई दी। सोशल मीडिया के उचित प्रयोग व प्रबंधन पर भी उन्होंने अपने विचार साझा किये। समाचारों और पोस्ट्स के बारे में सही और गलत की पहचान पर भी उन्होंने बल दिया। आगे उन्होंने कहा कि कई वर्षों तक अच्छा साहित्य या अच्छी पत्रिका पढ़ने से भी व्यक्ति के जीवन और विचारों में सकारात्मक परिवर्तन आ सकता है।

मातृवन्दना संस्थान के अध्यक्ष अजय कुमार सूद ने कार्यक्रम में मंचस्थ अतिथियों व शिमला शहर के गणमान्यों, गेयटी थिएटर सोसाइटी व मीडिया के बन्धुओं का भी कार्यक्रम की सफलता पर धन्यवाद व आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के अंत में सरस्वती विद्या मंदिर हिमरश्मि परिसर विकासनगर के विद्यार्थियों ने वन्देमातरम् की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में उत्तर क्षेत्र प्रचार प्रमुख अनिल कुमार, शिमला विभाग संघचालक वीरेन्द्र सिंह सिपहिया, सहविभाग संघचालक व साईं इंजीनियरिंग फाउंडेशन के संस्थापक राजकुमार वर्मा, सह-संपादक वासुदेव शर्मा, संस्थान सचिव जयसिंह ठाकुर, पत्रिका प्रमुख राजेन्द्र शर्मा, डॉ. कुशल कुमार शर्मा, विश्व संवाद केन्द्र प्रमुख दलेल सिंह ठाकुर, महाधिवक्ता हि.प्र. सरकार अशोक शर्मा, डॉ. रीता सिंह केन्द्रीय वित्त मंत्रालय हिन्दी सलाहकार व साहित्य परिषद हि.प्र. अध्यक्ष, रामकुमार गौतम एचएएस, संस्थान कोषाध्यक्ष धीरज वर्मा, हीरालाल रिखेन, संपादकीय मंडल की नीतू वर्मा व प्रसिद्ध लेखक और साहित्यकारों सहित शिमला शहर के अन्य गणमान्यजनों सहित सभागार में भारी संख्या में श्रोताओं की उपस्थिति रही। ❖

हिमाचल शिक्षा समिति के कार्यालय का उद्घाटन

मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने शिमला के सरस्वती विद्या मन्दिर विकासनगर में 68 लाख रुपये की लागत से निर्मित 'चेतराम ज्ञान भवन' का लोकार्पण किया। इस अवसर पर सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रतिस्पर्धा के इस दौर में यह चिन्ता की बात है कि हमारी शिक्षा प्रणाली में संस्कृति एवं मूल्य कहीं न कहीं पीछे छूट रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि विद्या भारती ने देशभर में 25,000 से अधिक शिक्षण संस्थान स्थापित किए हैं, जो 33 लाख से अधिक विद्यार्थियों को गुणात्मक शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारत में मौजूदा शिक्षा प्रणाली लॉर्ड मैकाले द्वारा स्थापित की गई व्यवस्था पर आधारित है, क्योंकि अंग्रेज भारत में ऐसी शिक्षा प्रणाली चाहते थे, जिसमें सम्मान, संस्कृति व मूल्यों के लिए स्थान न हो और केवल व्यक्ति शिक्षित बने। उन्होंने कहा कि आजादी के 72 वर्ष बाद भी हम इसी शिक्षा प्रणाली को ढो रहे हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को हाल ही में घोषित बोर्ड परीक्षा परिणामों में बेहतर प्रदर्शन के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार विद्यार्थियों को सर्वोत्तम शिक्षा प्रदान करने के लिए 10 आवासीय पाठशालाएं खोलेगी। उन्होंने कहा कि इसके लिए मौजूदा बजट में 25 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। मुख्यमंत्री ने सरस्वती विद्या मन्दिर बिलासपुर की कुमारी दीपाली को 12वीं की परीक्षा में 10वां स्थान हासिल करने के लिए सम्मानित किया। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए छात्र-छात्राओं को अपनी ऐच्छिक निधि से 31 हजार रुपये की घोषणा की। परिवहन व वन मंत्री गोविन्द ठाकुर ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य बड़े स्तर पर समाज की सेवा होना चाहिए ताकि भारत को 'विश्व गुरू' बनाया जा सके।

हिमाचल प्रदेश शिक्षा समिति के संगठन सचिव राजेन्द्र कुमार ने इस अवसर पर मुख्यमंत्री तथा अन्यों का स्वागत किया। इस अवसर पर स्कूली छात्र-छात्राओं ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया। ❖

हिमगिरी कल्याण आश्रम छात्रावास का भूमिपूजन

मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने एपीजी विश्वविद्यालय शिमला के समीप क्वारा में हिमगिरी कल्याण आश्रम छात्रावास की आधारशिला रखी। यह छात्रावास 2.30 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि हिमगिरी कल्याण आश्रम राज्य में जरूरतमंदों को सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक तथा अन्य सुविधाएं प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार समाज के प्रत्येक वर्ग को लाभान्वित करने के लिए प्रयास कर रही है। समाज में कुछ लोग ही सहायता के लिए आगे आते हैं। उन्होंने छात्रावास के निर्माण के लिए दो बीघा भूमि दान करने के लिए कानू देवी का सम्मान किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि आश्रम की ओर जाने वाली सड़क के निर्माण के लिए भूमि दान करने के लिए स्थानीय लोगों को आगे आना चाहिए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार सड़क निर्माण के लिए धनराशि प्रदान करेगी तथा क्वारा गांव में शीघ्र ही जलापूर्ति प्रदान की जाएगी साथ ही साथ इस छात्रावास के निर्माण के लिए स्थानीय जनसहयोग से 5 लाख रूपये जुटाने की भी घोषणा की।

हिमाचल प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. राजीव बिन्दल ने इस अवसर पर अपनी ओर से सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से छात्रावास को 5 लाख रूपये सहायता राशि देने की घोषणा की।

अखिल भारतीय बनवासी कल्याण आश्रम के उपाध्यक्ष तथा मुख्य वक्ता कृपा प्रसाद सिंह ने कहा कि इस महान कार्य में सहायता प्रदान करना मानवता के प्रति एक महान सेवा है। विनती शर्मा ने इस अवसर पर मुख्यमंत्री को मुख्यमंत्री राहत कोष के लिए 91 हजार रुपये का चेक प्रदान किया। शिक्षा मंत्री सुरेश भारद्वाज ने छात्रावास के निर्माण के लिए अपने एक माह का वेतन दान करने की घोषणा की। महापौर कुसुम सदरेट, भाजपा के संगठन सचिव पवन राणा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत प्रचारक संजीवन भी इस अवसर पर उपस्थित थे। ❖

पदाधिकारी बदले, एजेंडा नहीं: कोकजे

विश्व हिंदू परिषद् के नवनिर्वाचित अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष विष्णु सदाशिव कोकजे का मानना है कि किसी भी संगठन में पदाधिकारी बदलते हैं, एजेंडा नहीं बदलता। पदाधिकारी बदलने पर एजेंडा बदल जाएगा, ऐसा सोचना गलत है। विहिप का जो एजेंडा है, उसी के मुताबिक नई टीम भी काम करेगी। कोकजे का कहना है कि अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण, सामाजिक समरसता के ऊपर जोर, समाज से कुरीतियों को दूर करने पर जोर, पिछड़े वर्ग के लोगों की सहायता करना आदि कई विषयों पर संगठन वर्षों से काम कर रहा है। पदाधिकारी कोई भी रहे, सभी को इन्हीं विषयों पर काम करना है। संगठन सर्वोपरि है। अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण हो, यह देश-दुनिया के करोड़ों लोगों की भावना है। इसी भावना के अनुरूप संगठन काम कर रहा है। पदाधिकारी बदलने से भावना तो नहीं बदल जाएगी। कोकजे ने कहा कि किसी भी संगठन में व्यवस्था संचालन के लिए कुछ लोगों को जिम्मेदारी दी जाती है। संगठन में कोई न बड़ा होता है और न ही कोई छोटा। जिसे भी जिम्मेदारी दी जाती है, वह बेहतर से बेहतर करने का प्रयास करता है। वह भी पूरी सक्रियता के साथ जिम्मेदारी का निर्वहन करेंगे। लंबे समय से संगठन समाज में फैली कुरीतियों के खिलाफ प्रयासरत है। इस दिशा में और अधिक प्रयास किया जाएगा। जब तक कुरीतियां दूर नहीं होंगी, तब तक समाज मजबूत नहीं हो सकता। पिछड़े वर्ग के लोगों की सहायता करनी होगी। जब तक समाज का हर वर्ग मजबूत नहीं होगा तब तक राष्ट्रहर स्तर पर मजबूत नहीं दिखाई दे सकता। राष्ट्र की मजबूती के लिए आवश्यक है कि सभी लोग विकास की मुख्यधारा में शामिल हों। सामाजिक समरसता के ऊपर काफी जोर देने की आवश्यकता है। विश्व हिंदू परिषद् का मुख्य उद्देश्य है राष्ट्र को मजबूत बनाना। मूल रूप से मध्य प्रदेश के इंदौर के रहने वाले कोकजे मध्य प्रदेश के साथ ही राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भी रहे हैं। इसके अलावा हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल भी रहे हैं। ❖

सुरंगों के निर्माण से घटेगी अंतरराष्ट्रीय सीमा की दूरी

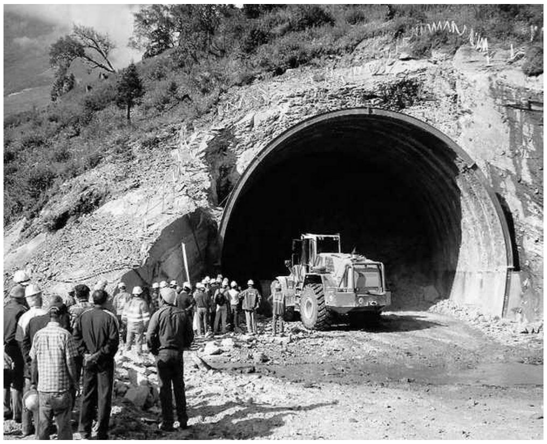

सरहद पार चीन व पाकिस्तान की संदिग्ध गतिविधियों के बीच भारत ने लद्दाख से सटे सीमांत इलाकों की किलेबंदी शुरू कर दी है। सीमावर्ती क्षेत्र को 12 महीने तक जोड़े रखने के लिए रक्षा मंत्रालय पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में छह सुरंगों का निर्माण करेगा। करीब नौ किलोमीटर लंबी रोहतांग सुरंग बनने के बाद रक्षा मंत्रालय अब मनाली-लेह मार्ग में आने वाले 16400 फीट ऊंचे बारालाचा दर्रा पर 13 किलोमीटर लंबी सुरंग बनाने जा रहा है। इसके अलावा 17480 फीट ऊंचे तांगलांग-ला दर्रे में सात किलोमीटर लंबी और 16600 फीट ऊंचे लाचूलंग-ला दर्रा में 14 किमी सुरंग बनाने की तैयारी में है। लद्दाख में चीन की अंतर्राष्ट्रीय सीमा तक जाने वाले मनाली लेह मार्ग को सालभर वाहनों की आवाजाही के लिए खुला रखने के लिए बारालाचा, चांगलांग-ला और लाचूलंग-ला दर्रा के नीचे सुरंग बनाना बेहद जरूरी है। सर्दियों में भारी बर्फबारी के कारण मनाली-लेह मार्ग छह महीने तक बंद हो जाता है। इस दौरान मात्र हवाई सेवा ही सीमावर्ती क्षेत्र में पहुंचने का एकमात्र जरिया रह जाता है। सीमावर्ती क्षेत्र के सफर को सरल बनाने के लिए रक्षा मंत्रालय ने इन दर्रों पर बनने वाली सुरंगों को सैद्धांतिक मंजूरी दे दी है।

रोहतांग दर्रे पर सुरंग के बनने से लेह की दूरी 48 किलोमीटर कम हुई है। बारालाचा, चांगलांग-ला और लाचूलंग-ला दर्रे पर सुरंग निर्माण होने पर मनाली से लेह की दूरी 120 किलोमीटर और कम हो जाएगी। साथ ही दो दिन का सफर भी घटकर एक दिन का रह जाएगा। सेना के लिए महत्वपूर्ण मनाली-लेह मार्ग साल भर के लिए खुला रहेगा।

राष्ट्रमंडल खेलों में तीसरे स्थान पर भारत

ऑस्ट्रेलिया के गोल्ड कोस्ट में चार से 15 अपैल तक हुए 21वें राष्ट्रमंडल खेलों के अंतिम दिन भारत ने कुल सात पदक जीते, जिसमें एक स्वर्ण पदक बैडमिंटन में साइना नेहवाल ने महिला सिंगल्स में भारत की ही पीवी सिंधू को हराकर हासिल किया। भारत ने इस बार कुल 26 स्वर्ण, 20 रजत और 20 कांस्य सहित कुल 66 पदक जीते और पदक तालिका में तीसरे नंबर पर रहा। ऑस्ट्रेलिया ने 198 पदकों के साथ पहला और इंग्लैंड ने 136 पदकों के साथ दूसरा स्थान हासिल किया।

मैरी कॉम बनीं ध्वजवाहकः 21वें राष्ट्रमंडल खेलों का 15 अपैल को ऑस्ट्रेलिया के शहर गोल्ड कोस्ट के करारा स्टेडियम में शानदार समापन समारोह हुआ। गोल्ड कोस्ट के मेयर ने कॉमनवेल्थ गेम्स 2018 को अलविदा कहते हुए राष्ट्रमंडल खेल फेडरेशन का ध्वज पारंपरिक अंदाज में इंग्लैंड के शहर बर्मिंघम के मेयर को दिया, जहां 2022 में इन गेम्स का आयोजन होगा। समापन समारोह में सभी देशों के एथलीटों ने परेड में हिस्सा लिया। इस दौरान भारत की तरफ से दिग्गज मुक्केबाज मैरी कॉम ध्वजवाहक रहीं, जिन्होंने इस बार महिला मुक्केबाजी में स्वर्ण पदक जीता और ऐसा करने वाली वह पहली भारतीय महिला बनीं। प्रिंस एडवर्ड ने समापन की घोषणा की।

विकास व अंजुम को नौकरी देगा हिमाचल

राष्ट्रमंडल खेलों में पदक जीतकर देश का नाम रोशन करने वाले हमीरपर के भारोत्तोलक विकास व ऊना जिले के घुसाड़ा निवासी शूटिंग खिलाड़ी अंजुम को प्रदेश सरकार की ओर से नौकरी का प्रस्ताव रखा जाएगा। इसके अलावा देश व प्रदेश का नाम रोशन करने पर सम्मानित भी किया जाएगा। यह बात ऊर्जा मंत्री अनिल शर्मा ने रविवार को धर्मशाला में जिला स्तरीय हिमाचल दिवस समारोह के बाद कही। उन्होंने कहा कि यह खुशी की बात है कि प्रदेश के खिलाड़ी देश का नाम रोशन कर रहे हैं। सरकार की ओर से नियमों के अनुसार सभी सुविधाएं दी जाएंगी। ❖

अलग धर्म की मान्यता के बाद अब लिंगायत को अल्पसंख्यक का दर्जा देने की घोषणा

कर्नाटक में सरकार ने एक बार फिर बड़ा दाव खेला है। लिंगायत को अलग धर्म की मान्यता के बाद अब इसे अल्पसंख्यक का भी दर्जा दिए जाने की घोषणा की गई है। विधानसभा चुनाव से पहले सियासत का हर दाव कर्नाटक में खेलना कांग्रेस की मजबूरी बन गई है। बीजेपी के लगातार निशाने पर रहने के बाद सीएम सिद्धारमैया ने लिंगायत समुदाय के लोगों को अलग धर्म का दर्जा देने के सुझाव को मंजूरी कुछ दिन पहले दी थी। अब लिंगायत धर्म को सरकार ने अल्पसंख्यक का दर्जा देने की घोषणा की है। ❖

राज्य की शिक्षा व्यवस्था तृणमूल की जागीर नहीं

125 स्कूलों को बंद करने के सम्बंध में पश्चिम बंगाल के शिक्षा मंत्री पार्थ चटर्जी के बयान पर तीखी प्रतिक्रिया देते हुए भाजपा के राष्ट्रीय सचिव राहुल सिन्हा ने कहा कि यहां (पश्चिम बंगाल) पर पार्थ चटर्जी की जागीरदारी नहीं है कि उनकी मर्जी में जो आया, उन्होंने किया और फिर उसे बंद करने का फरमान सुना दिया। इस देश में कानून व्यवस्था का शासन है और अदालत नाम की एक चीज भी है। उन्हें अगर लग रहा है कि वे जो चाहेंगे, करेंगे तो हम भी उनकी चुनौती को स्वीकार कर रहे हैं। राहुल सिन्हा ने कहा कि दरअसल तृणमूल यहां की शिक्षा व्यवस्था को चौपट करना चाहती है। सरकारी स्कूलों को इस सरकार ने राजनीति का अखाड़ा बना दिया है। कॉलेज-विश्वविद्यालयों में फेल होने वाले छात्रों को पास कराना चाहती है। शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है। राज्य में स्वास्थ्य व्यवस्था की हालत जगजाहिर है। जिस तरह तृणमूल के समर्थक शिक्षकों के साथ मारपीट कर रहे हैं, उसी तरह चिकित्सकों के साथ भी मारपीट की घटना आम बात है। चिकित्सकों पर शर्तें लादी जा रही हैं। लिहाजा स्वास्थ्य व्यवस्था की भी हालत शिक्षा व्यवस्था की तरह ही हो रही है। उल्लेखनीय है कि पार्थ चटर्जी ने कहा था कि कुछ स्कूलों में धार्मिक शिक्षा देने के साथ छात्रों को लाठी भांजना भी सिखाया जा रहा है। इसके जवाब में राहुल सिन्हा ने कहा कि शिक्षा मंत्री का आरोप बेबुनियाद है। कहीं भी धार्मिक भावनाओं को भड़काया नहीं जा रहा है। अब यदि भारत माता की जय बोलना और देश के लिए गौरवान्वित होना सांप्रदायिकता है, तो हम प्रत्येक दिन यह काम करेंगे। ❖ **साभार: हिमालय हुंकार**

महाराष्ट्र में सुरक्षाबलों ने 14 नक्सलियों को किया ढेर

महाराष्ट्र में गढ़चिरौली में तड़गांव के जंगलों मे पुलिस ने मुठभेड़ में 14 नक्सलियों को मार गिराया। इनमें जिला सतर के दो बड़े नक्सली भी शामिल हैं। नक्सलियों के खिलाफ ये इस साल का सबसे बड़ा ऑपरेशन है। इससे पहले 3 अप्रैल को भी महाराष्ट्र पुलिस ने एनकाउंटर में 3 नक्सलियों को मार गिराया था। इसमें दो महिलाएं शामिल थीं। आईजी शरद शेलार ने बताया कि भामरागढ़ के पास तड़गांव के जंगलों में नक्सलियों की खोज अभी भी जारी है। ऑपरेशन को गढ़चिरौली पुलिस की स्पेशल कॉम्बैट यूनिट सी-60 के कमांडो ने अंजाम दिया है। जिला स्तर के दो नक्सल कमांडर भी मुठभेड़ में मारे गए हैं। दो की पहचान साइनाथ और सैनयू के रूप में की गई है। डीजीपी सतीश माथुर ने कहा कि हाल के वर्षों में ये नक्सलियों के खिलाफ किया गया बड़ा ऑपरेशन है।

तेलंगाना पुलिस ने की थी छत्तीसगढ़ में कार्रवाई: छत्तीसगढ़ के बीजापर में होली के दिन हुए एनकाउंटर में 6 महिला कमांडर समेत 10 नक्सली मारे गए थे। तेलंगाना पुलिस की ग्रेहाउंड्स फोर्स ने पड़ोसी राज्य की सीमा में 35 किमी अंदर घुसकर इस कार्रवाई को अंजाम दिया था। बीजापुर में हुई मुठभेड़ 2014 में तेलंगाना राज्य के गठन के बाद सबसे बड़ी कार्रवाई थी। पिछले साल दिसंबर में पुलिस ने कोठागुडेम जिले में 8 नक्सली मार गिराए थे। 2005 में अविभाजित आंध्र प्रदेश में नक्सल आंदोलन में पुलिस ने बड़े पैमाने पर नक्सलियों के खिलाफ कार्रवाई की थी। ❖

देवधरा करसोग

-देवीसिंह वर्मा

शिमला से 100 तथा मंडी से 115 कि.मी. की दूरी पर, पीर पंजाल की पहाड़ियों, में समुद्रतल से 4000 फुट उंचाई के लगभग स्थित है सुंदर घाटी करसोग। घाटी में धान की काफी फसल होती है जिस कारण इसे धान का कटोरा भी कहा जाता है। यहां पर प्रकृति ने सुन्दरता को बड़ी उदारता से उकेरा है। यहां के रीति-रिवाज, लोक-संस्कृति व पौराणिक मंदिर बहुत ही अनूठे हैं। इनमें ममलेश्वर महादेव मंदिर, कामाक्षा देवी मंदिर, मगरू महादेव मंदिर, बड़े योगी देव मन्दिर बगशाड, बडेयोग, मूल माहूंनाग मंदिर बखारी, चिण्डी माता मन्दिर, महामाया मंदिर पांगणा आदि करसोग घाटी के कुछ प्रमुख मंदिर हैं। महाभारत काल-खंड के दौरान पाण्डवों ने करसोग घाटी में काफी समय बिताया।

करसोग को देवधरा कहना गलत नहीं होगा क्योंकि यहां हर कोने में देवी-देवताओं के छोटे-बड़े मंदिर स्थित हैं, जिनमें विराजमान देवी-देवताओं के दर्शन करने लोग दूर-दूर से आते हैं। कुछ प्रमुख मन्दिरों की स्थापना के पीछे की कहानी से आपको अवगत कराएंगे।

माँ कामाक्षा मंदिर

पांडवों द्वारा निर्मित पहाड़ी शैली में बना माँ कामाक्षा का मंदिर। यह उत्कृष्ट मंदिर करसोग के मुख्य बाजार से लगभग 7 किलोमीटर दूर काओ नामक गाँव में स्थित है। कुछ लोगों के मतानुसार परशुराम जी द्वारा मन्दिर की स्थापना की गई थी। हिमाचल में यह एकमात्र मंदिर था जहां मनोकामना पूर्ण होने पर माता को भेंट के रूप में भैंसा दिया जाता था लेकिन अब पशुबलि प्रथा को कानूनी रूप से बंद करने पर मंदिर में भैंसों की बलि बंद हुई है। मंदिर के गर्भ भाग में माँ कामाक्षा की मूर्ति विशेष आकर्षक परिधानों में स्थित है। यह मूर्ति एक सिंहासन पर विराजमान चतुर्भुज है जो शेर की सवारी पर है। सिंहासन के नीचे शेर बने देखे जा सकते हैं। जिसके मध्य भाग में गणेश जी की प्रतिमा है। माँ कामाक्षा की मूर्ति के चारों ओर भी कई छोटी छोटी मूर्तियां निर्मित हैं। मंदिर में सिंहासन पर अष्टधातु की मूर्ति महिषासुर मर्दिनी की है। सिंहासन में प्राचीन लिपि भी अंकित है। यहां से दाहिनी ओर एक रास्ता मंदिर के गर्भगृह को जाता है। यानी यह गर्भगृह भूमिगत है और सामने जो मूर्ति स्थापित है वह दूसरी मंजिल पर बिराजमान है। मंदिर के बाहर भैरो की विशाल मूर्ति है।

आश्विन नवरात्रों के दिन मंदिर व ग्रामीणों के लिए महत्वपूर्ण होता है। इस दौरान लोग दूर-दूर से आते हैं। माता का रथ भी सजाया जाता है। दुर्गा अष्टमी को रात्रि मंदिर प्रांगण में लोग हाथ में मशालें पकड़ माँ कामाक्षा को बुलाने का आह्वान करते हैं। पुजारी भीतर मूर्ति के समक्ष बैठकर मंत्रोचारण सहित पूजा करता है। वाद्य दल द्वारा शहनाई, ढोल नगाड़े और दूसरे सम्बंधित साजों को एक विशेष शैली में बजाया जाता है। पूजा का यह क्रम लगभग पूरी रात्रि चलता रहता है। दुर्गा अष्टमी के दिन दूरदराज क्षेत्रों से लोग दर्शनों के लिए आते हैं।

तत्तापानी तीर्थ

ऐसी मान्यता है कि महर्षि जमदग्नि ने कापी समय अपनी पत्नी रेणुका के साथ सतलुज के किनारे व्यतीत किया था। जमदग्नि ऋषि अपने आश्रम में नित्य यज्ञ का आयोजन किया करते थे। यज्ञ में आने वाले लोगों को श्रद्धा से भोजन भी करवाते थे। विद्वानों के अनुसार जब परशुराम स्नान कर रहे थे तो उनकी गीली धोती से निकले पानी से यहां पर गंधयुक्त गर्म पानी उत्पन्न हुआ और तभी से यह स्थल आस्था का प्रतीक बन गया है।

माना जाता है कि त्रेतायुग से ही मकर संक्रान्ति व

वैशाखी के पावन अवसरों पर इस क्षेत्र के श्रद्धा के प्रतीक सतलुज नदी के किनारे स्थित गर्म पानी के स्रोतों में स्नान करने की चली परम्परा व सल्फर युक्त गर्म पानी से अनेक प्रकार के शारीरिक रोग भी स्वत: ही दूर होते हैं। प्रतिवर्ष मकर संक्रान्ति व वैशाखी के अवसर पर दूर-दूर से हिन्दू संस्कृति में विश्वास रखने वाले लोग यहां स्नान कर अपने को पवित्र मानते हैं और पूरे मास यहां रौनक रहती थी। ग्रहों की दशा के निवारण करने हेतु तुलादान करने के लिए दूर-दूर से लोगों का आगमन होता है। यहां लगने वाले मेलों में प्रतिवर्ष प्रदेश के लोगों के साथ-साथ काफी संख्या में विदेशी सैलानी भी तत्तापानी का रूख़ करते हैं।

महर्षि जमदग्नि और उनके बेटे परशुराम ने इस स्थान पर तप कर इसे तपस्थली बनाया था। मान्यता यह भी रही है कि जो व्यक्ति अपने परिजनों की अस्थियां हरिद्वार में प्रवाहित न कर पाने की स्थिति में तत्तापानी में भी प्रवाहित कर सकता है। इसी के चलते लघु हरिद्वार का दर्जा भी दिया गया था।

देश के चार कुम्भ स्थलों में चार-चार वर्ष के पश्चात कुम्भ के मेले लगते हैं परन्तु तत्तापानी में बैशाखी व मकर संक्रान्ति के अवसर पर प्रतिवर्ष कुम्भ की भांति लगने वाले मेले के लिए लोगों में खासा उत्साह रहता था। कुम्भ मेलों में जाना सबके बस में नहीं होता। वे तत्तापानी में मकर संक्रान्ति अथवा वैशाखी के दिन गर्म पानी के चश्मों में स्नान कर हरिद्वार या अन्य स्थानों पर लगने वाले कुम्भ के मेलों के समान पवित्र ही मानते थे। महर्षि जमदग्नि और उनके बेटे भगवान विष्णु के शेषावतार परशुराम के तप से निर्मित तत्तपानी के प्राकृतिक गर्म पानी के स्रोत 800 मैगावाट कोल बांध बनने से डूब गये हैं। सदियों पुराने आस्था के प्रतीक एवं ऐतिहासिक तत्तापानी के जलमग्न होने से स्थानीय देव समाज सहित प्रदेश के लाखों लोगों की आस्था का जलमग्न होना 21 वीं सदी की एक बड़ी वेदनापूर्ण घटना है।

आधुनिक तकनीक से जमीन में बोर कर पाईप के द्वारा निकाले गये गर्म पानी में वह आस्था नहीं है जो भगवान परशुराम के तप से निकले उन स्रोतों में थी। आखिर देश के लिए राजस्व अर्जित कराने की बलि चढ़ गया आस्था का पवित्र तीर्थ तत्तापानी। ❖

स्कूलों में होगा नेताओं का केवल हाथ जोड़ कर स्वागत

हिमाचल पदेश में स्कूलों का पैसा मंत्रियों व नेताओं के सम्मान पर खर्च नहीं होगा। सरकारी स्कूलों में होने वाले कार्यक्रमों में मुख्यातिथि व अन्य अतिथियों का शॉल, टोपी, गुलदस्ते व फूल मालाओं से स्वागत करने पर रोक लगा दी गई है। इस संबंध में शिक्षा मंत्री सुरेश भारद्वाज ने सभी स्कूलों के प्रधानाचार्यों व मुख्य अध्यापकों को निर्देश जारी कर दिए हैं। सरकारी स्कूलों में कार्यक्रम तो होंगे पर नेताओं का स्वागत हाथ जोड़कर ही किया जाएगा। मंत्रियों और नेताओं के सम्मान के लिए शिक्षकों व बच्चों की जेब से भी कोई राशि खर्च न किए जाने के आदेश जारी किए गए हैं। जिन्हें कड़ाई से लागू किया जाएगा। स्कूल प्रधानाचार्यों व अध्यापकों को स्कूलों में होने वाले आयोजनों में जारी खर्चीली परंपरा बंद करने को कहा गया है। इस तरह की परंपरा से फिजूल खर्च हो रहा है। ❖

Dr. Hem Raj Sharma
Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh
NATIONAL CHIKITSAK GURU
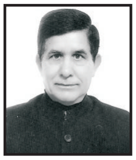
RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi
"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"
JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre
Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

अमर बलिदानी: मुरारबाजी

5 जनवरी, 1665 को सूर्य ग्रहण के अवसर पर शिवाजी महाराज ने माता जीजाबाई के साथ महाबलेश्वर मंदिर में पूजा की। फिर वे दक्षिण के विजय अभियान पर निकल गए। तभी उन्हें सूचना मिली कि मिर्जा राजा जयसिंह और दिलेर खां पूना में पुरन्दर किले की ओर बढ़ रहे हैं। शिवाजी दक्षिण अभियान को स्थगित करना नहीं चाहते थे पर इन्हें रोकना भी आवश्यक था। कुछ ही समय में मुगल सेना ने पुरन्दर किले को घेर लिया। वह निकटवर्ती गांवों में लूटपाट कर आतंक पैलाने लगी। इससे शिवाजी ने मुगलों की चाकरी कर रहे मिर्जा राजा जयसिंह को एक लम्बा पत्र लिखा, जो अब एक ऐतिहासिक विरासत है, पर जयसिंह पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। उल्टे पुरन्दर किले पर हमले और तेज हो गए। पुरन्दर किला दो चोटियों पर बना था। मुख्य किला 2500 फुट ऊंची चोटी पर था, जबकि 2100 फुट वाली चोटी पर वज्रगढ़ बना था। जब कई दिनों के बाद भी मुगलों को किले को हथियाने में सफलता नहीं मिली, तो उन्होंने वज्रगढ़ की ओर से तोपें चढ़ानी प्रारम्भ कर दीं। मराठा वीरों ने कई बार उन्हें पीछे धकेला; पर अन्तत: मुगल वहां तोप चढ़ाने में सफल हो गए।

इस युद्ध में हजारों मराठा सैनिक मारे गए। पुरन्दर किले में मराठा सेना का नेतृत्व मुरारबाजी देशपाण्डे कर रहे थे। उनके पास 6000 सैनिक थे, जबकि मुगल सेना 10000 की संख्या में थी और फिर उनके पास तोपें भी थीं। किले पर सामने से दिलेर खां ने, तो पीछे से राजा जयसिंह के बेटे कीरत सिंह ने हमला बोल दिया। इससे मुरारबाजी दो पाटों के बीच संकट में फंस गए। उनके अधिकांश सैनिक मारे जा चुके थे। शिवाजी ने समाचार पाते ही नेताजी पालकर को किले में गोला-बारूद पहुंचाने को कहा। उन्होंने पिछले भाग में हल्ला बोलकर इस काम में सफलता पाई, पर वे स्वयं किले में नहीं पहुंच सके। इससे किले पर दबाव तो कुछ कम हुआ; पर किला अब भी पूरी तरह असुरक्षित था। किले के मराठा सैनिकों को अब आशा की कोई किरण नजर नहीं आ रही थी। मुरारबाजी को भी कुछ सूझ नहीं रहा था। अन्तत: उन्होंने आत्माहुति का मार्ग अपनाते हुए निर्णायक युद्ध लड़ने का निर्णय लिया। किले का मुख्य द्वार खोल दिया गया। बचे हुए 700 सैनिक हाथ में तलवार लेकर मुगलों पर टूट पड़े। इस आत्म बलिदानी दल का नेतृत्व स्वयं मुरारबाजी कर रहे थे। उनके पीछे 200 घुड़सवार सैनिक भी थे। भयानक मारकाट पारम्भ हो गई। मुरारबाजी मुगलों को काटते हुए सेना के बीच तक पहुंच गए। उनकी आंखें दिलेर खां को तलाश रही थीं। वे उसे जहन्नुम में पहुंचाना चाहते थे, पर वह सेना के पिछले भाग में हाथी पर एक हौदे में बैठा था। मुरारबाजी ने एक मुगल घुड़सवार को काटकर उसका घोड़ा छीना और उस पर सवार होकर दिलेर खां की ओर बढ़ गए। दिलेर खां ने यह देखकर एक तीर चलाया, जो मुरारबाजी के सीने में लगा। इसके बाद भी उन्होंने आगे बढ़कर दिलेर खां की ओर अपना भाला फेंककर मारा। तब तक एक और तीर ने उनकी गर्दन को बींध दिया। वे घोड़े से निर्जीव होकर गिर पड़े। यह ऐतिहासिक युद्ध 22 मई, 1665 को हुआ था। मुरारबाजी ने जीवित रहते मुगलों को किले में घुसने नहीं दिया। ऐसे वीरों के बल पर ही छत्रपति शिवाजी क्रूर विदेशी और विधर्मी मुगल शासन की जड़ें हिलाकर 'हिन्दू पर पादशाही' की स्थापना कर सके। ❖

आईए जानें! संस्कृत भाषा का अभ्यास कैसे करें

बाल्यकाल में माता की गोद में बैठकर हम लोगों ने सुनकर और बोलकर मातृभाषा का ज्ञान प्राप्त किया। भाषा अभ्यास की यही स्वाभाविक पद्धति है। सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। भाषा अभ्यास के चार सोपान हैं। जब कोइ व्यक्ति अपना क्षेत्र छोड़कर किसी दूसरे भाषाभाषी प्रदेश में जाकर निवास करता है तब वह वहां की भाषा को दैनिक व्यवहार के कारण बिना परिश्रम और व्यवस्थित अध्ययन के थोड़े ही समय में सीख लेता है। उसी प्रकार आप भी सम्भाषण(बोलना) से संस्कृत का अध्ययन कर सकते हैं। बोलने से भाषा शीघ्र ही सीखी जा सकती है। संस्कृत के जिन शब्दों और वाक्यों को आप जानेंगे उनका दैनिक व्यवहार में आप उपयोग करेंगे ही। इसी उद्देश्य के साथ पाठकों के लिए संस्कृत भारती हिमाचल प्रदेश के सहयोग से 'संस्कृतं वदाम' सोपान क्रम से मातृवन्दना प्रारम्भ कर रही है।

संस्कृतं वदाम

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरूः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरूवे नमः॥

गुरू ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर हैं। गुरू ही साक्षात् ब्रह्म हैं उन्हें हम नमन करते हैं।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले तू गोविन्दं प्रभाते करदर्शनम्।

हाथ के अग्र भाग में लक्ष्मी का वास है, हाथ के मध्य भाग में सरस्वती का और हाथ के मूल में गौरी का वास है। अतः प्रातःकाल हाथ का दर्शन करें।

अभिवादन	
हरिः ऊं	हैलो
नमस्ते/नमस्कारः	नमस्ते/नमस्कार
सुप्रभातम्	सुप्रभात
शुभदिनम्	शुभदिन
शुभसायम्	शुभ संध्या
शुभ रात्रिः	शुभ रात्रि
धन्यवादः	धन्यवाद
स्वागतम्	स्वागत है
क्षम्यताम्	क्षमा कीजिए
चिन्तामास्तु	चिंता मत कीजिए
पुनःमिलामः	फिर मिलेंगे
अस्तु	जी/ठीक है
शुभाशयाः	शुभेच्छा

सगे/सम्बन्धी			
पिताः	पिता	माता	माता
पितामहः	दादा	पितामही	दादी
मातामहः	नाना	मातामही	नानी
पुत्रः	बेटा	पुत्री	बेटी
सहोदरः	भाई	सहोदरी	बहन
अग्रजः	बड़ा भाई	अग्रजा	बड़ी बहिन
अनुजः	छोटा भाई	अनुजा	छोटी बहिन
मातुलः	मामा	मातुलानी	मामी
पतिः	पति	पत्नी	पत्नी
श्वसुरः	ससुर	श्वश्रूः	सास
जामाता	दामाद	स्नुषा	बहू

गिलहरी और स्मृति पदक

गिलहरी की काया
भले ही
छोटी थी
पर
छाती की ठठरी में
विद्यमान दिल
बड़ा था।
सागर-सेतु के
निर्माण के समय
नल-नील सहित
अनेकों बंदर
भारी भरकम
पाषाण शिलाएं
उठा कर
ला रहे थे।
गिलहरी ने भी
इस पुनीत कार्य में
हाथ बंटाया,
पृथ्वी पर लोट-लोट कर
अपने बालों में
धूल-कणों को लाती
और झाड़ जाती
सेतु-स्थल पर
उसका अनवरत श्रम
सबने देखा
भूरि-भूरि प्रशंसा भी की।
गिलहरी का
अभिनंदन करने
स्वयं प्रभु राम आए
और
अपने श्यामल हाथ की
उंगलियां
उसकी पीठ पर फेरकर
उसे एक
अविस्मरणीय स्मृति पदक
प्रदान कर गए।
गिलहरी की पीठ पर
उंगलियों के
वे तीन निशान
आज भी
विद्यमान हैं।

राम प्रसाद शर्मा 'प्रसाद'
सिहाल (कांगड़ा) हि.प.

फर्ज

बेटी तो बेटी होती है, इसमें कोई हर्ज नहीं
पर बहु भी किसी की बेटी है ,
क्या यह समझना हमारा,?र्ज नहीं
बेटी की कमज़ोरीयाँ छुपाओ इसमें कोई हर्ज नहीं
गलती करे बहु, बेटी मान कर समझाओ ,
क्या हमारा फर्ज नहीं ?
बहु बेटी दोनों का ही घर है,
फिर बहु को क्यों लगता डर है
दोनों का है हक बराबर,
फिर बहु का क्यों होता अनादर
बेटी बहु दोनों है जरूरी, बहु से कैसी यह दूरी
बेटी घर की है फुलवारी,
बहु से सजती घर की बगिया न्यारी
सुखद सपना होता है , बेटी के लिए ससुराल
फिर बहु बन क्यों होती, बेटी बेहाल
बेटी की आँहों पे आँखें भरते हैं ,
बहु को क्यों फिर तंग करते हैं
सास अगर बहु को बेटी ,और बहु सास को माँ समझे।
दुनियाँ के आधे से ज्यादा मसले खुद सुलझें
बेटी को ससुराल में रहने दें ,नया संसार बसाने दें
उसको अपना ध्यान नए, रिश्तों में लगने दें
आप संभालो बहु रानी, न हो उसे कोई परेशानी।

सुषमा देवी
भरमाड़, जिला कांगड़ा (हि.प्र.)

पहाड़ी कबता { सराब }

मत पियो माहणुओ, तुहां सराब
नशा करदा सबणां रा, जीणां खराब
घरे च इक सराबी होए दुखी रैहन्दा
टब्बर सारा ,नशे मुकाई दित्ता भाउचारा
सेहत, सर्म, पैसा मुकीयांदा सारा
घरेत, सरीक मज़े लैंदे दिखीने नज़ारा
जणांसा तांई मते स्यापे
दिखी दुखी हुन्दे मापे
मत पियो माहणुओ तुहाँ सराब
नशा करदा सबणां रा, जीणां खराब
नशेड़ी बेची दिन्दे, घरे दे दाणे
भुखे तड़ण निके- निके न्याणे
जाहलु लाल परी, अन्दर जाँदी
सराबी जो कोई , होस नी रैहन्दी
गलाँदे सराब पीणे ने, गम मुकी आँदे
मियो तिनाओ पूछा जेड़े,सराबीयाँ ओ सैंहन्दे।

सुषमा देवी, भरमाड़, कांगड़ा

!! ॐ तारिण्यै नमः!!

शुभकामनाओं सहित

दुर्गा पेपर कन्र्वर्टज़

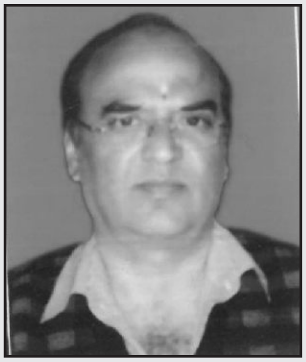

राकेश शर्मा

मुद्रक एवं लेखन सामग्री वितरक

कांशी भवन, तारादेवी, शिमला

दूरभाष: 0177-2831790, 98166-40010

With best compliments from:

SVM SR. SEC. SCHOOL

Mahajan Bazar, Mandi (H.P.)

33 years in excellent service in education

Ph.: 01905-222048, E-mail: svmmandihp@gmail.com website: www.svmmandihp.com

Run by: Mandi SVM Prabandh Samiti (Regd.) | *Affiliated to: HP Board of School Eduacation Dharamshala*

(SCIENCE AND COMMERCE STREAM)

Highlights:

- Value based Education
- Highly qualified staff
- 21 Rooms with digital education system
- Latest Play way system for NY and KG Classes
- Regular Parents & Teachers Meetings
- Fully equipped 3 science Lab
- Well-furnished Music room
- Well-furnished Saraswati Sadan (Hall)
- Fully Equipped drinking water supply
- with Aqua Guard
- Play Ground for volley ball, badminton and basketball etc.
- Top ranking in cultural and sports activities.

Dr. Umesh Mandyal
Principal

योग के डिप्लोमा धारक ले सकेंगे फिजियोथेरेपी के स्नातक कोर्स में प्रवेश

योग का ज्ञान रखने वालों के लिए अब विश्वविद्यालय और कॉलेजों में प्रवेश पाना आसान होगा। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने योग में एक साल तक का डिप्लोमा रखने वालों को फिजियोथेरेपी के स्नातक कोर्सों के प्रवेश में सहूलियत देने का फैसला लिया है। आयोग ने इस संबंध में सभी विश्वविद्यालय और कॉलेजों को आदेश भी जारी किया है। यूजीसी ने यह निर्देश योग को बढ़ावा देने को लेकर गठित विशेषज्ञ कमेटी की सिफारिश के बाद दिया है। कमेटी ने हाल ही में विश्वविद्यालय और कालेजों में फिजियोथेरेपी के स्नातक कोर्स में योग में डिप्लोमा रखने वालों को प्रवेश देने का प्रस्ताव दिया था। जिसे आयोग ने स्वीकार करते हुए मानव संसाधन विकास मंत्रालय से भी मंजूर मांगी थीं। हाल ही में इस मंजूरी के मिलने के बाद यूजीसी ने यह निर्देश जारी किया है। यूजीसी ने जारी निर्देश में साफ किया है कि योग में डिप्लोमा रखने वालों को यह सहूलियत सिर्फ विश्वविद्यालय और कालेजों में चलाए जाने वाले फिजियोथेरेपी कोर्स में प्रवेश को लेकर ही मिलेगी। इसके लिए प्रवेश के इच्छुक छात्रों को प्रवेश प्रक्रिया के दौरान योग में डिप्लोमा होने की जानकारी देनी होगी। इसके आधार पर ही छात्रों की मेरिट तैयार की जाएगी। यूजीसी ने कहा कि इस दौरान प्रवेश प्रक्रिया में कोई बदलाव नहीं होगा। मंत्रालय से जुड़े अधिकारियों के मुताबिक यूजीसी के इस निर्देश से योग की पढ़ाई की तरफ लोग तेजी से आकर्षित होंगे। साथ ही योग से जुड़े कोर्सों की अहमियत भी बढ़ेगी। कमेटी ने इसके अलावा भी योग को बढ़ाना देने को लेकर मंत्रालय को कई सुझाव दिए हैं। इनमें योग को स्कूल कोर्स में शामिल करने जैसे कई प्रस्ताव शामिल हैं। माना जा रहा है कि मंत्रालय इसे लेकर भी जल्द ही कोई फैसला ले सकता है। गौरतलब है कि सरकार की रुचि को देखते हुए ही यूजीसी ने योग को बढ़ावा देने का यह कदम उठाया है। मंत्रालय ने इसे लेकर कमेटी का गठन भी इसी मंशा के तहत किया था। ❖

अम्बेडकर जयंती पर बिलासपुर में निकला भव्य संचलन

बिलासपुर नगर में गत 14 अप्रैल डॉ. भीमराव अंबेडकर जयन्ती के अवसर पर समरसता कार्यक्रम का आयोजन किया गया इसके साथ ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने एक गुणवत्ता पथ संचलन निकाला। कार्यक्रम में मुख्य रूप से अध्यक्ष बिलासपुर के प्रसिद्ध समाजसेवी गुरविन्द्र सिंह रहे वहीं मंच पर जिला संघचालक इन्द्र सिंह डोगरा नगर संघचालक सुरेन्द्र कुमार व मुख्य वक्ता किस्मत कुमार प्रांत कार्यवाह रहे। अपने उद्‌बोधन में किस्मत कुमार ने अंबेडकर जयंती पर गुणवत्ता संचलन निकालने के लिए सभी स्वयंसेवकों को बधाई व शुभकामनाएं दी। उन्होंने डॉ. अंबेडकर के द्वारा शोषित वर्ग में समरसता के कार्य एवं उनके संदेशों से जीवन में प्रेरणा लेने पर बल दिया। पथ संचलन कार्यक्रम के मुख्य बिन्दु इस प्रकार रहे:

- अध्यक्ष के तय समय पर न पहुंचने के कारण कार्यक्रम की अध्यक्षता किसी अन्य से करवाई गई।
- संचलन की गुणवत्ता बनाए रखने हेतु चयनित स्वयंसेवकों का पांच बार अभ्यास वर्ग लगाया गया। संचलन में जिन स्वयंसेवकों के पग नहीं मिल रहे थे उन्हें चलते संचलन में से बाहर बुला लिया गया।
- संचलन के विभिन्न स्थलों पर पहुंचने के जो समय निश्चित किये गए थे ठीक उसी समय संचलन उस स्थल से गुजरा। ❖

किसानों के लिए लाभकारी है नींबू की खेती

देश भर में नींबू वर्गीय फलों की खेती व्यापक रूप से की जाती है।

मिट्टी एवं जलवायु

नींबू वर्गीय फल एक सदाबहार, उप-ऊष्णकटिबंधीय समूह से संबंधित है, इनकी खेती पाले रहित अर्द्ध ऊष्णकटिबंधीय एवं उपोष्णकटिबंधीय जलवायु में भी अच्छी तरह से की जा सकती है। 40 से कम तापमान युवा पौधों के लिए हानिकारक है। नींबू वर्गीय फलों की खेती के लिए हल्की मिट्टी जो गहरी और अच्छी जल निकासी के गुणों वाली हो एवं जिसका पीएच 5.5 से 7.5 तक हो, उपयुक्त है।

पौध रोपण

रोपण के लिए सबसे अच्छा मौसम मई से अगस्त होता है। रोपण के समय 15-20 किलो गोबर की खाद और 500 ग्राम सुपर फॉस्फेट प्रति गड्ढे के हिसाब से डालते हैं।

खाद एवं उर्वरक

खाद, साल में तीन बार फरवरी, जून और सितंबर में, क्रमश: तीन बराबर मात्रा में दिया जाता है, साथ ही विभिन्न अंतरशस्य क्रियाएं जैसे खरपतवार नियंत्रण, क्यारियां बनाना, निराई-गुड़ाई करना आदि महत्वपूर्ण हैं।

खरपतवार नियंत्रण

खरपतवार नियंत्रण विभिन्न तरीकों से किया जाता है, जैसे मल्चिंग, यह व्यक्तिगत रूप से और खरपतवार नाशियों के द्वारा आजकल प्लास्टिक मल्चिंग सामान्य रूप से की जाती है।

सिंचाई

भूमिगत जलस्तर घटने के कारण, सिंचाई पानी में कमी आ गई इसलिए बूंद-बूंद सिंचाई पद्धति का उपयोग जरूरी हो गया है। मार्च, अप्रैल, मई, जून, जुलाई, अगस्त, सितम्बर,अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर में सिंचाई आवश्यक है यदि वर्षा न हो।

कटाई-छंटाई

फलन वाले पौधों की कटाई-छंटाई की आवश्यकता कम होती है, शुरूआती वर्षों में पौधे के मूल तने को बढ़ने दिया जाता है एवं पौधे पर टहनियां जमीन से 40-50 सेमी. के ऊपर ही बढ़ने दी जाती है। पौधे का मध्य भाग खुला होना चाहिए और शाखाएं सभी दिशाओं में अच्छी तरह से वितरित होनी चाहिए। क्रॉस टहनियां और वाटर सकर्स को जल्द ही हटा देना चाहिए। सभी रोगग्रस्त, घायल, झूलती हुई और मृत टहनियों को समय-समय पर हटा देना चाहिए।

फलों की तुड़ाई एवं उपज

नीबू एवं लेमन 150-160 दिन में परिपक्व हो जाते हैं। नीबू एवं लेमन की तुड़ाई हरी परिपक्व अवस्था पर की जाती है, ताकि उनकी अम्लता उच्चतम स्तर पर बनी रहे।

प्रमुख कीट एवं प्रबंधन

पत्ती माइनर ये छोटे शलभ या डिम्ब होते हैं,जो पत्तियों एवं परोहों पर अण्डे देते हैं, ये पत्तियों मे प्रदातिक अवस्था में छेद करता है, जिससे वे मुरझाने लगती हैं। वर्षा ऋतु में इसका प्रकोप बढ़ जाता है।

रोकथाम

निकोटिन सल्फेट या नीम की खली का घोल (1 किलो प्रति 10 लीटर पानी में मिलाकर) या क्विनैल्पोस (1.25 मिलीलीटर) या मोनोक्रोटोपॉस (1.0 मिलीलीटर 1 लीटर पानी के साथ) के छिड़काव द्वारा रोकथाम कर सकते हैं। ❖

आवासीय योग शिक्षा शिविर

नागदन्डी, जम्मू-कश्मीर

स्थानः-

विवेकानन्द केन्द, रामकृष्ण महासम्मेलन आश्रम, नागदन्डी, अच्छाबल, अनंतनाग, जम्मू-कश्मीर

शारीरिक व मानसिक दृष्टि से तंदुरस्त व्यक्ति जिनकी उम्र 18 से 65 वर्ष है वो इस शिविर में हिस्सा ले सकते हैं। शिविरार्थी को शिविर के सारे - शारीरिक व बौद्धिक सत्र अनिवार्य हैं।

शिविर की दिनचर्या

सुबह 5 से रात्रि 10 बजे तक

सहयोग राशी - 4000

शिविरार्थी का पंजीकरण समय

8 जुलाई सायं 5 बजे है। शिविर 18 जुलाई सायं तक चलेगा 19 जुलाई सुबह शिविरार्थी प्रस्थान कर सकते हैं।

अधिक जानकारी के लिए

9418015995, Email: nagdandi@vkendra.org

लाखों की दवा- बहुगुणकारी बथुआ

-डॉ. राकेश पंडित

बथुआ एक प्रकार का खरपतवार, घासपात या वीड 'Weed' के रूप में जाना जाता है और अक्सर आर्थिक रूप से कमजोर लोग इसको साग या सब्जी की तरह खाते हैं। बथुआ को चिक वीड व Chenopodium album के नाम से भी यह जाना जाता है। यह आमतौर पर अन्य फसलों के साथ अपने आप उग जाता है। किसान-बागवान इसे फालतू समज कर उखाड़ कर फेंक देते हैं। लेकिन पौषण एवं औषधीय गुणों की दृष्टि से यह बहुत ही उपयोगी है। पोषण की दृष्टि से इसमें कैल्शियम, मैग्नीशियम, आयरन, सोडियम, मेंगनीस, स्लेनियम और कॉपर या ताँबा जैसे खनिज, विटामिन सी, ए, बी कॉम्प्लेक्स, आदि प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसके पत्तों, कोमल शाखाओं एवं बीजों का प्रयोग खाने एवं औषधी के रुप मे किया जाता है। इसको साग, भुर्जी, सब्जी, रायता, परांठा, पूरी, जूस, सूप, पकोड़े, सलाद आदि बना कर खाया जा सकता है। बथुआ एक बढ़िया 'एंटीऑक्सीडेंट' एवं भूख बढ़ाने के लिए उपयोगी माना गया है।

बथुआ एक स्वादिष्ट एवं पौष्टिक वनस्पति के साथ अनेक रोगों के उपचार मे भी उपयोगी है। इससे खून की कमी- अनीमिया, कब्ज, बवासीर, पेचिश, सूजन, जिगर और तिल्ली के रोगों, अपचन, अम्लपित्त आदि रोगों का इलाज सँभव है। मधुमेह, नेत्र रोग, बालों के रोग, विटामिन सी की कमी, दांतों के रोगों, पेट के कीड़ों, आँतरिक सूजन आदि रोगों में उपयोगी है।आधुनिक खोजों से सिद्ध हुआ है कि बथुआ सेवन करने से महिलाओं में स्तन कैंसर से भी बचा जा सकता है।औषधि के तौर पर इसके पत्तों का रस 20 ग्राम प्रात: सायं तथा बथुआ के बीजों का पाउडर 5-10 ग्राम पानी य छाछ के साथ सेवन करें।प्रसव के बाद बथुआ, मेथी, अजवायन एवं गुड़ मिलाकर सेवन करने से प्रसव के बाद की परेशानियों से छुटकारा मिलता है।

मासिक धर्म के कष्ट में बथुआ बीज 10 ग्राम तथा सोंठ पाउडर 10 ग्राम मिला कर 300 ग्राम पानी में उबाल कर 100 ग्राम शेष रहने पर गुड या शहद मिलाकर सेवन करने से लाभकारी है। बथुआ, आमला, गिलोय का ताजा रस 30 ग्राम दिन में तीन बार लेने से पीलिया में लाभ मिलता है। बथुआ बीजों के लड्डू नियमित सेवन करने से नेत्र रोगों तथा कमजोरी में लाभकारी है। त्वचा रोगों तथा रक्तशुद्धि के लिए बथुआ के पत्ते 10 ग्राम तथा नीम के पत्ते 5 ग्राम पीसकर सेवन करना चाहिए। अमीर-गरीब, बच्चे-बुजुर्ग-महिलाएं सभी इस सस्ते सरल सुलभ शाक का उपयोग कर स्वास्थ्य लाभ उठा सकते हैं। ❖ **राष्ट्रीय संयोजक, आरोग्य भारती वनौषधि प्रचार।**

नव रचनाकारों के लिए शुभ सूचना

यदि आप स्थानीय लोक-संस्कृति, परंपरा, इतिहास, साहित्य व समसामयिक विषयों पर अपने विचारों को लेखनी के माध्यम से व्यक्त करना चाहते हैं तो मातृवन्दना आपको अवसर प्रदान करती है। तो कलम उठाइए और हो जाइए तैयार।

स्वयं बनें नागरिक पत्रकार

अपने क्षेत्र की कोई विशेष जानकारी/घटना आप पाठकों से साझा करना चाहते हैं तो मातृवन्दना कार्यालय को अवश्य अवगत करवाएं। हम उसको अपनी पत्रिका में प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे।

'राम सिंह' में दिखेंगी रामपुर की सुनिधि

रामपुर बुशहर के ननखड़ी से ताल्लुक रखने वाली सुनिधि विज्ञापन से अपना भविष्य शुरू कर अब हिंदी फिल्म में दिखाई देंगी। सुनिधि फिल्म 'राम सिंह' में मुख्य भूमिका में नजर आएंगी, जबकि अशोक चौहान फिल्म के नायक हैं। पिल्म के डायरेक्टर गोगी रंधावा हैं। 'राम सिंह' की शूटिंग पूरी हो चुकी है तथा इसके गानों का फिल्मांकन हिमाचल में होना बाकी है। यह फिल्म मई में भारत, नेपाल व दुबई के अलावा अन्य दो-तीन देशों में रिलीज होगी। सुनिधि के करीब एक दर्जन पंजाबी गीत जोश, पीटीसी पंजाबी व पीटीसी चकदे के अलावा यू-ट्यूब पर भी आए हैं। आने वाले दिनों में सुनिधि के गाये हिंदी गीत रिलीज होने जा रहे हैं। सुनिधि को दक्षिण भारतीय फिल्मों की पेशकश भी आ रही है। ❖

शिव्या पठानिया

शिव्या पठानिया ने सोनी चैनल पर पसारित होने वाले हमसफर नाटक से अपने करियर की शुरूआत की थी। शिव्या ने विभिन्न चैनलों में प्रसारित होने वाले हेली सोप में अभिनय कर अपनी खास पहचान बनाई है। शिमला के खलीनी की रहने वाली शिव्या का जन्म 26 जुलाई 1991 को शिमला में हुआ। इनकी स्कूली शिक्षा शिमला में हुई। इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान वर्ष 2012 में उन्होंने चंडीगढ़ में एक मॉडलिंग प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और कई पुरस्कार भी जीते। उन्हीं दिनों शिव्या ने मिस शिमला का खिताब भी अपने नाम किया था। इसके बाद शिव्या ने टी.वी अभिनेत्री बनने की ठानी और एक के बाद एक कदम बढ़ाती गई। दिव्या ने 'हम सफर' के बाद 'एक रिश्ता साझेदारी का' 'दिल ढूंढता है' जैसे प्रसिद्ध नाटकों में काम कर जहां अपनी पहचान बनाई वहीं दर्शकों के दिल में भी अपनी जगह बना पाने में कामयाब हुई। ❖

रूबीना दिलैक

शिमला की रहने वाली रूबीना दिलैक ने विभिन्न टी.वी. चैनलों में अभिनय कर खूब नाम कमाया है। रूबीना का जन्म 26 अगस्त 1987 को शिमला में हुआ। रूबीना की शिक्षा-दीक्षा शिमला में ही हुई है। रूबीना ने वर्ष 2016 में छोटी बहू नाटक में मुख्य किरदार से अपने करियर की शुरूआत की। इसके बाद छोटी बहू-2 में भी मुख्य भूमिका निभाकर शानदार प्रदर्शन किया। इससे पहले रूबीना सिंदूर बिन सुहागन जैसे सुप्रसिद्ध नाटक में सहायक भूमिका निभा चुकी हैं। रूबीना को बेहतर अभिनय के लिए कई बार सम्मानित भी किया जा चुका है। ❖

मण्डी के धर्मपुर की आयरा भी दिखेंगी फिल्मों में

मंडी जिला के धर्मपुर की बेटी ने बालीवुड में अपनी काबिलीयत का लोहा मनवाया है। ग्राम पंचायत पैहड़ के झरेड़ा गांव से ताल्लुक रखने वाली आयरा राजपूत बालीवुड में कामयाबी के झंडे गाड़ रही है। आयरा ने कामयाबी हासिल करके बता दिया कि अगर मन में कुछ करने का जज्बा हो तो कोई भी मुश्किल आपके सपनों को पंख लगने से नहीं रोक सकती। आयरा राजपूत कास्टिंग डायरेक्टर अजित विश्वकर्मा की फिल्म 'व्हेन ओबामा लव ओसामा' में मुख्य भूमिका अदा कर रही हैं, जिसकी शूटिंग यूपी व मुंबई में पूरी हो चुकी है। आयरा ने बताया कि उसने पहले एड फिल्मों में काम करना शुरू किया। अब तक वह करीब 25 एड फिल्में कर चुकी हैं। पेंटलून की ऐड से आयरा को बालीवुड में पहचान मिली। इससे पहले वह हिमाचल के दो गीतों की एलबम में भी काम कर चुकी हैं। ❖

टी.वी. कलाकार अलिशा पंवर

हिमाचल प्रदेश की अलिशा पंवर ने टी.वी. सीरियलों में अपनी प्रतिभा को बखूबी दर्शाया है। सोलन जिले के कुनिहार के ऊंचा गांव की अलिशा कलर्स टी.वी. के थ्रिलर शो 'इश्क में मर जांवां' में लीड रोल निभा रही हैं। अलिशा की शिक्षा शिमला से हुई है। 2012 में अलिशा के सिर शिमला क्वीन का ताज भी सज चुका है। बीकॉम प्रथम वर्ष की पढ़ाई के दौरान अलिशा का चयन सीरियल के ऑडिशन के दौरान हुआ था। अलिशा ने 'थपकी प्यार की' सीरियल में बतौर सह-अभिनेत्री काम किया है। जबकि 'जमाई-राजा' और 'बेगु सराय' धारावाहिक में भी वह अहम भूमिका निभा चुकी हैं। स्कूल के समय अलिशा ने 'अक्कड़-बक्कड़ बंबेबो' फिल्म में बतौर बाल-कलाकार कार्य करके अपने अभिनय को निखारना शुरू कर दिया था। इन दिनों अलिशा का इश्क में मर जांवा धारावाहिक खूब सुर्खियां बटोर रहा है। हालांकि अलिशा फिल्मों में अभिनेत्री के रूप में काम करने की भी इच्छा रखती हैं। ❖

चीन ने भारत सीमा पर तैनात किए

चीन की सेना ने भारत की सीमा पर तैनात अपनी एक शाखा को बेहद ताकतवर अमेरिकी शैली के सोल्जर कॉम्बेट सिस्टम से लैस किया है। चीनी मीडिया के अनुसार भविष्य में सेना को इससे 'सूचना व युद्ध' के लिए तैयार किया जा सकेगा। इस अत्याधुनिक क्यूटीएस-11 सिस्टम से लैस होने के बाद बॉर्डर पर तैनात चीनी सैनिकों की टुकड़ी और भी ताकतवर हो गई है। इसके बाद भारतीय सेनाओं को और सर्ताक रहना होगा। चीनी सेना के एक्स्पर्ट सोंग झोनपिंग ने ग्लोबल टाइम्स को बताया 'क्यूटीएस-11 सिस्टम से लैस होने के बाद बॉर्डर पर तैनात चीनी सैनिकों की टुकड़ी और भी ताकतवर हो गई है। इसके बाद भारतीय सेनाओं को और सतर्क रहना होगा। चीनी विशेषज्ञों के अनुसार, क्यूटीएस-11 सिस्टम उसी तरह से अत्याधुनिक है जैसा कि अमेरिकी सेना इस्तेमाल करती है। चीनी सेना के एक्स्पर्ट सोंग झोनपिंग ने ग्लोबल टाइम्स को बताया, 'क्यूटीएस-11 को दुनिया का 'सबसे मजबूत फायरपावर' कहा जाता है। इसमें न सिर्फ फायर आर्म्स होते हैं, बल्कि पूरी तरह से डिजिटाइज्ड एंटीग्रेटेड इंडिविजुअल सोल्जर कॉम्बेट सिस्टम होता है। इनमें पहचान करने और संचार कर सकने की क्षमता भी शामिल है। इस सिस्टम में एक असाल्ट राइफल और 20 मिलीमीटर का ग्रेनेड लॉन्चर भी शामिल होता है। यह सिस्टम करीब 7 किलो वजन का होता है। इस पोर्स के हर सैनिक को इस अत्याधुनिक सिस्टम के साथ ही थर्मल इमेजर, ऑप्टोइलेक्ट्रॉनिक और पोजिशनिंग सिस्टम्स से भी लैस किया जाता है। यह सिस्टम कापी महंगा है। ❖ **साभार: हिन्दू विश्व**

दुष्कर्मियों और आर्थिक भगोड़ों की खैर नहीं

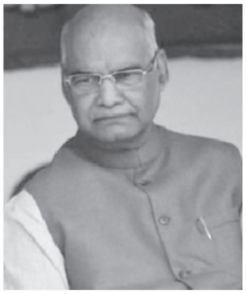

बारह साल से कम उम्र की बच्चियों से दुष्कर्म के दोषियों को पांसी और आर्थिक अपराध कर परार होने वालों की संपत्ति को कुर्क करने और बेचने जैसे सख्त कानून को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद से भी मंजूर मिल गई है। एक दिन पहले ही कैबिनेट से पारित इन दोनों अध्यादेशों को रविवार की सुबह ही मंजूर मिल गई। अब दोनों विधेयक आगामी मानसून सत्र में संसद में पेश किए जाएंगे। कठुआ ाऔर उन्नाव की शर्मनाक घटनाओं के बाद प्रधानमंत्री नरेंदृ मोदी ने न्याय की बात की थी। उसी के आलोक में शनिवार को केंद्रीय कैबिनेट ने दोनों अध्यादेशों को पारित किया था। क्रिमिनल लॉ आर्डिनेंस 2018 के मुताबिक 12 साल से कम उम्र की बच्चियों के साथ दुष्कर्म करने वालों को मृत्युदंड का प्रावधान किया गया है। कम से कम सजा भी 20 साल की होगी जिसे बढ़ाकर आजीवन भी किया जा सकता है। अन्य मामलों में भी सात साल सश्रम कारावास को बढ़ाकर 10 वर्ष किया गया है। यही नहीं जांच और न्यायिक प्रक्रिया तेज करने का भी प्रावधान किया जाएगा। एक तरफ जहां दुष्कर्म की फारेंसिक जांच के लिए सभी पुलिस स्टेशन और अस्पताल को विशेष किट उपलब्ध कराया जाएगा। वहीं नए फास्ट ट्रैक कोर्ट भी बनाए जाएंगे। पीड़िता की सहायता के लिए चलाए जा रहे वन स्टाप सेंटर भी देश के सभी जिलों में स्थापित होंगे। जबकि फ्यूजिटिव ऑफेंडर आर्डिनेंस के तहत इसका इंतजाम किया गया है कि बैंकों से कर्ज लेकर विदेश भागने वालों की सभी संपत्ति जब्त की जा सकेगी। खास बात यह है कि 100 करोड़ रूपये का लोन लेकर भागने वालों की संपत्ति उसके अपराधी साबित होने से पहले ही जब्त की जा सकेगी। यानी नीरव मोदी, विजय माल्या समेत सभी कुख्यात आर्थिक भगोड़े अब बच नहीं सकेंगे। भगोड़ा आर्थिक अपराधी अब कोई भी दीवानी दावा नहीं कर पाएगा और जब्त संपत्ति के प्रबंधन और निपटान के लिए एक प्रशासक नियुक्त किया जाएगा। आर्थिक भगोड़ों के खिलापं लाया गया यह अध्यादेश पिछले संसद सत्र के दौरान विधेयक के रूप में भी लाया गया था लेकिन गतिरोध के कारण पारित नहीं किया जा सका था। ❖

सोशल मीडिया का शरारती स्वरूप

-एन. के. सिंह

बीती 2 अप्रैल को कुछ संगठनों द्वारा आहूत भारत बंद के दौरान झूठ प्रचारित कर समाजिक संगठनों को भड़काने के लिए सोशल मीडिया का जबरदस्त इस्तेमाल किया गया। इस क्रम में एक मैसेज वायरल हुआ कि आरक्षण की व्यवस्था खत्म होने जा रही है और सुप्रीम कोर्ट का फैसला उसी दिशा में एक पहल है। हकीकत यह है कि इस आदेश का आरक्षण से कोई लेना देना नहीं है। इसी तरह एक वीडियो वायरल हुआ जिसमें विलाप करती एक मां की गोद में एक घायल बच्ची थी। बताया गया कि यह बच्ची पथराव में घायल हुई है और चूंकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में यह वीडियो ज्यादा दिखा, लेकिन हकीकत यह थी कि यह एक पुराना वीडियो था। आरक्षण के खिलाफ किसी शख्स ने एक वीडियो वायरल किया जिसमें हनुमान जी की खंडित मूर्ति दिखाई गई, यह बताते हुए कि इसे तोड़ा गया है जबकि हकीकत में यह वीडियो दक्षिण भारत के एक राज्य में 2017 में हुए एक प्रदर्शन के समय का था और इसका भारत बंद से काई वास्ता नहीं था। भारत के संविधान में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार अनुच्छेद 19(1) (अ) के खिलाफ युक्ति युक्त निर्बंध लगाने के कुल आठ आधार अनुच्छेद 19(2) में वर्णित हैं और पिछले 70 साल में सरकारों ने इन निर्बंधों के तहत करीब तीन दर्जन कानून बनाए हैं जो मीडिया पर अंकुश लगाए रख सकते हैं।

एक दशक पहले तक देश में मुख्यधारा का मीडिया ही हुआ करता था। किसी भी खबर के कानून सम्मत न होने की स्थिति में इन पर कार्रवाई हो सकती थी। तकनीकी विकास और शिक्षा से हुए सशक्तिकरण से बढ़ी सम्पन्नता के साथ ही प्रत्येक नागरिक में खुद को अभिव्यक्त करने की उत्कंठा बढ़ी है। ट्विटर और फेसबुक जैसी सोशल मीडिया साइटों के आने से इन आकांक्षाओं को नए पर लगे हैं। अब हर व्यक्ति अपने-अपने ज्ञान और तर्कशक्ति के मुताबिक अद्वैतवाद से अवमूल्यन तक हर विषय पर बोलने लगा है। पूरा जनविमर्श अधकचरे ज्ञान पर आधारित हो गया है। जो कमी थी वह टीवी स्टूडियो में चलने वाले कार्यक्रमों ने पूरी कर दी है। चूंकि अधिकांश सोशल मीडिया या एकाउंट्स रातों रात अस्तित्व में आए जिनमें तमाम फर्जी भी होते हैं। जिनसे फर्जी खबरों के जरिये सनसनी पैदा कर कमाई की जा रही है। इससे आज पूरी दुनिया में एक नया संकट पैदा हो गया है। फेक न्यूज इसी प्रक्रिया की उत्पत्ति है। यह शब्द मात्र 20 माह पहले व्यापक प्रचलन में आया खासकर अमेरिकी राष्ट्रपति के चुनाव में ट्रंप को लेकर। आज यह दुनिया में प्रजातंत्र के समक्ष एक बड़ा खतरा और देशों के बीच पारस्परिक तनाव का सबब बन गया है। अब फेक न्यूज एक नई समस्या के रूप में सामाजिक तनाव पैदा करने लगी है। पेड न्यूज की परिभाषा जानबूझकर गलत जानकारी देना और भ्रामक प्रचार/वितंडावाद पैदा करके किसी व्यक्ति, संस्था या समूह के खिलाफ वैमनस्य पैदा करने के प्रयास के रूप में दी जा सकती है।

इसके खिलाफ भारत में अनेक कानून पहले से ही अस्तित्व में हैं और औपचारिक मीडिया आमतौर पर इस कुप्रयास में नहीं पाया गया है, लेकिन सोशल मीडिया में यह बीमारी तेजी से बढ़ रही है। औपचारिक मीडिया से जुड़े संस्थान भ्रामक हेडलाइंस तो देते हैं और उनका दृष्टिकोण एवं उन पर आधारित तथ्य तो 'सेलेक्टिव अप्प्रोप्रिएशन ऑफ फैक्ट्स' के तहत चुनिंदा हो सकते हैं, लेकिन वे जानबूझकर झूठ को सच कह कर नहीं दिखा सकते। दरअसल फेक न्यूज की समस्या मूलरूप से औपचारिक मीडिया यथा अखबार और समाचार चैनलों की नहीं है। कारण यह है कि औपचारिक मीडिया मूर्तरूप में और कानूनी तौर से स्थापित और सर्वविदित रूप से विद्यमान रहता है और इसका संपादक समाज का सम्मानित व्यक्ति होता है। दरअसल फेक न्यूज की समस्या से भारत ही नहीं पूरा विश्व खासकर सैकड़ों वर्ष पुराने ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस और जर्मनी जैसे देश भी काफी प्रभावित हो रहे हैं। भारत जैसे देश में जहां सामाजिक-धार्मिक पहचान समूह हजारों की तादाद में ही नहीं हैं, बल्कि पारस्परिक शाश्वत द्वंद्व के भाव में रहते हैं। ऐसे में भले ही सरकार ने फेक न्यूज पर अपना कदम वापस ले लिया हो, लेकिन क्या औपचारिक मीडिया या संस्थाओं ने अपने को बेहतर करने के उपाय किए?क्या सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्म आत्मनियमन के लिए कटिबद्ध हो सकेंगे। अगर नहीं तो यह भेड़िया फिर कभी भी आ सकता है। ❖

अमेरिका में वार्षिक सूर्य नमस्कार 'योगाथन'

अमेरिका में एक हिंदू संगठन के द्वारा आयोजित वार्षिक सूर्य नमस्कार योगाथन में 11000 से अधिक लोगों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। योग के बारे में जागरूकता फैलाने और स्वस्थ शरीर, मन और शुद्ध आत्मा की प्राप्ति में इसके फायदे बताए गए। यह वार्षिक आयोजन हिंदू स्वयंसेवक संघ (एचएसएस) द्वारा किया गया था। इस कार्यक्रम का आयोजन अमेरिका के 27 राज्यों के 350 विभिन्न स्थानों पर किया गया जिसमें महापौरों, कांग्रेसी-सीनेटरों और राज्य गवर्नर्स सहित 58 बड़े अधिकारी शामिल हुए। दो हफ्तों तक चले इस आयोजन में पूरे अमेरिका में 11254 प्रतिभागियों ने 828586 सूर्य नमस्कार किया। एचएसएस स्वयंसेवकों ने 156 स्थानों पर एक सूर्य नमस्कार कार्यशाला आयोजित की। एचएसएस ने स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए वार्षिक कार्यक्रम 'ह्यूमैनिटी योगाथन' को 2007 में लॉन्च किया था। एचएसएस भारतीय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ(आरएसएस) की एक सहायक संस्था है जो भारत के बाहर रहने वाले हिन्दुओं का समर्थन करती है। सूर्य नमस्कार 10 चरणों का एक रूटीन योग है जो शारीरिक प्रक्रिया को संतुलित करता है। ❖

साभार: हिमालय हुंकार

विदेशी व मुस्लिम महिलाएं सीख रही हैं संस्कृत

देश में जहां संस्कृत पढ़ने वालों की संख्या में गिरावट आई है, वहीं विदेशियों में प्राच्य विद्या के गूढ़ रहस्यों को जानने की जिज्ञासा बढ़ रही है। इसका साक्षी है संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय। वर्तमान में यहां रूस, ब्रिटेन, म्यांमार, नेपाल सहित विभिन्न देशों के छात्र भारतीय संस्कृति व संस्कृत को पढ़ने व समझने में जुटे हुए हैं। विश्वविद्यालय में विदेशी ही नहीं मुस्लिम महिलाएं भी संस्कृत सीख रही हैं। रूस की प्रो. ओल्गा पापेल्को को भारतीय दर्शन ने इस कदर प्रभावित किया कि वह संस्कृत पढ़ने के लिए अपना देश छोड़कर भारत आ गई। रशियन प्रेंसिडेंसियल एकेडमी ऑफ नेशन, मास्को की असिस्टेंट प्रोफेसर रह चुकी प्रो. ओल्गा वर्तमान में विश्वविद्यालय से तीन वर्षीय संस्कृत पाठ्यक्रम में डिप्लोमा कर रही हैं। उन्होंने बताया कि वह 2003 में पहली बार भारत घूमने आई थीं। इसके बाद विभिन्न व्याख्यानों में भारत में कई बार आना-जाना हुआ। धीरे-धीरे संस्कृति व दर्शन से लगाव बढ़ता गया। अंततः प्राच्य विद्या के गूढ़ रहस्यों को समझने के लिए संस्कृत पढ़ने का मूल उद्देश्य सनातन धर्म का रूस में प्रचार करना है ताकि रूस के लोग भी भारतीय दर्शन व ज्योतिष के बारे में जान सकें। आम तौर पर लोग संस्कृत को पंडितों की भाषा समझ लेते हैं। इस मिथक को तोड़ रही हैं मऊ की जेबा आफरीन। वह संस्कृत विश्वविद्यालय से शास्त्री कर रही हैं। उन्होंने आठवीं तक की शिक्षा मदरसा से हासिल की है। शास्त्री कर रही जेबा के परिवार वालों का संस्कृत से दूर-दूर तक का नाता नहीं है। इसके बावजूद जेबा संस्कृत सीखने व समझने में जुटी है, ताकि मुस्लिम महिलाओं को संस्कृत के ज्ञान से परिचित कराया जा सके। ❖

With best compliments from:

DUSSEHRA FESTIVAL COMMITTEE, KULLU

(International Kullu Dussehra Festival 19-10-2018 to 25-10-2018)

The famous International Kullu Dussehra Festival is celebrated at Kullu Himachal Pradesh in the month of September/October every year.

This Festival is being celebrated in the district kullu since 1660. The Dussehra Festival symbolizes not only the ancient cultural and social traditions but also cherished legacy. During this one week long festival, more than 250 local deities of Kullu Distt. (Gods and Goddesses) alongwith Devlu (followers) participate and pay their obesiance to Lord Shri Raghunath Jee, the principal deity of Kullu Valley who is taken from the Ragunathpur Temple to main mela Ground of Kullu named as Dhalpur Maidan.

During this festival period, cultural troups from various States and folk dancers from abroad give their performances. A large number of National & International tourists also visit kullu during this festival. Rath yatra, Exhibition by various Govt. Departments an NGOs, Sports meet and local marts displaying local Handicrafts and other local products etc. are the main attractions of this festival.

"Come and enjoy in the valley of God"

Yunus, IAS
Deputy Commissioner -cum-Chairman
Dussehra Festival Committee, Kullu

जहां पेड़ों को काटा नहीं पूजा जाता है

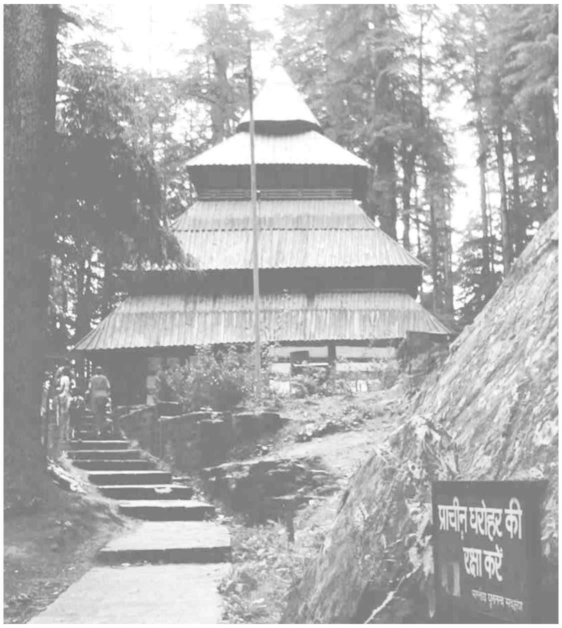

हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में जंगलों के संरक्षण की एक अनूठी परम्परा सदियों से चली आ रही है। देव आस्था के साथ पेड़ों, जंगलों को पूजने की यह प्रथा महज अंधविश्वास नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण की एक कारगर युक्ति है, जिसे समझदार पूर्वजों ने सदियों पहले स्थापित कर दिया था। यह उनकी दूरदृष्टि का परिचायक भी है। घाटी के लोग आज भी 'देव पूजा' का पूरी निष्ठा के साथ पालन करते हैं। कुछ जंगलों को देव आस्था से जोड़ दिया गया था, जहां कोई व्यक्ति पेड़-पौधों पर कुल्हाड़ी या दराती नहीं चलाता है और जंगलों को उनके प्राकृतिक स्वरूप में रहने दिया जाता है। जंगलों से लकड़ी या पत्ते लाना भी निषिद्ध है। यही नहीं, जंगल में कहीं आग न लग जाए, इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता है और इसके लिए इन जंगलों के इर्द-गिर्द बसे गांवों का हर बाशिंदा धूम्रपान से भी परहेज करता है। पेयजल क्षेत्र सहित आठ ऐसे जंगल हैं, जिनमें दराती व कुल्हाड़ी नहीं चलती। राज्य का वन विभाग भी गांव के लोगों का सहयोग व समर्थन करता है। वन्य क्षेत्रों में बाहरी लोगों का प्रवेश वर्जित है और सूचना बोर्ड लगे हुए हैं। इन जंगलों के कारण ही उनके इलाके के जलस्त्रोत बचे हुए हैं। ❖

मात्र पांच रूपये में करते हैं मरीजों का इलाज

एक तरफ जहां महंगी डॉक्टरी फीस है वहीं एक ऐसे चिकित्सक भी हैं जो गरीब और जरूरतमंद लोगों का कम पैसे में न सिर्फ इलाज करते हैं बल्कि हरसंभव मदद भी करते हैं। हम बात कर रहे हैं 62 वर्षीय डॉ. अवधेश कुमार झा की। गांधी जी के नाम से प्रसिद्ध डॉ. झा पिछले 30 वर्षों से गरीब मरीजों की सेवा कर रहे हैं। शहर में एमबीबीएस चिकित्सकों की फीस जहां कम से कम दो सौ रूपये से लेकर एक हजार रूपये है, वहीं डॉ. झा मरीजों से फीस के रूप में केवल पांच रूपये लेते हैं। कई मरीजों से तो यह भी फीस नहीं लेते हैं। वह प्रतिदिन तकरीबन एक सौ मरीजों का इलाज करते हैं। रात तक उनके क्लीनिक में मरीजों की भीड़ लगी रहती है। मरीज भी ज्यादातर निर्धन ही होते हैं। डॉ. झा ने बताया कि उन्हें ईमानदारी की रोटी भाती है। डॉ. झा के पास एमआर भी आते हैं, अपनी कंपनी की दवा के प्रचार करने के लिए उनसे जो नमूने के तौर पर दवाएं मिलती हैं, उन्हें वे निर्धन मरीजों को दे देते हैं। इसी तरह पूर्णिया शहर में एक चिकित्सक कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. राम के लिए मरीज और बुजुर्गों की मुस्कान सर्वोपरि है। गरीब मरीजों को नि:शुल्क इलाज और मुफ्त दवा उपलब्ध कराने के साथ ही बुजुर्गों को नियमित गर्म कपड़ा और जरूरत की सामग्री मुहैया कराते हैं। डॉ. राम अपने सामाजिक दायित्वों के साथ-साथ स्वस्थ समाज के लिए लगातार प्रयासरत हैं। माता-पिता से मिली प्रेरणा के बाद वे कई वर्षों से इन कार्यों में विभिन्न माध्यमों से सक्रिय हैं। ❖ **साभार: हिन्दू गर्जना**

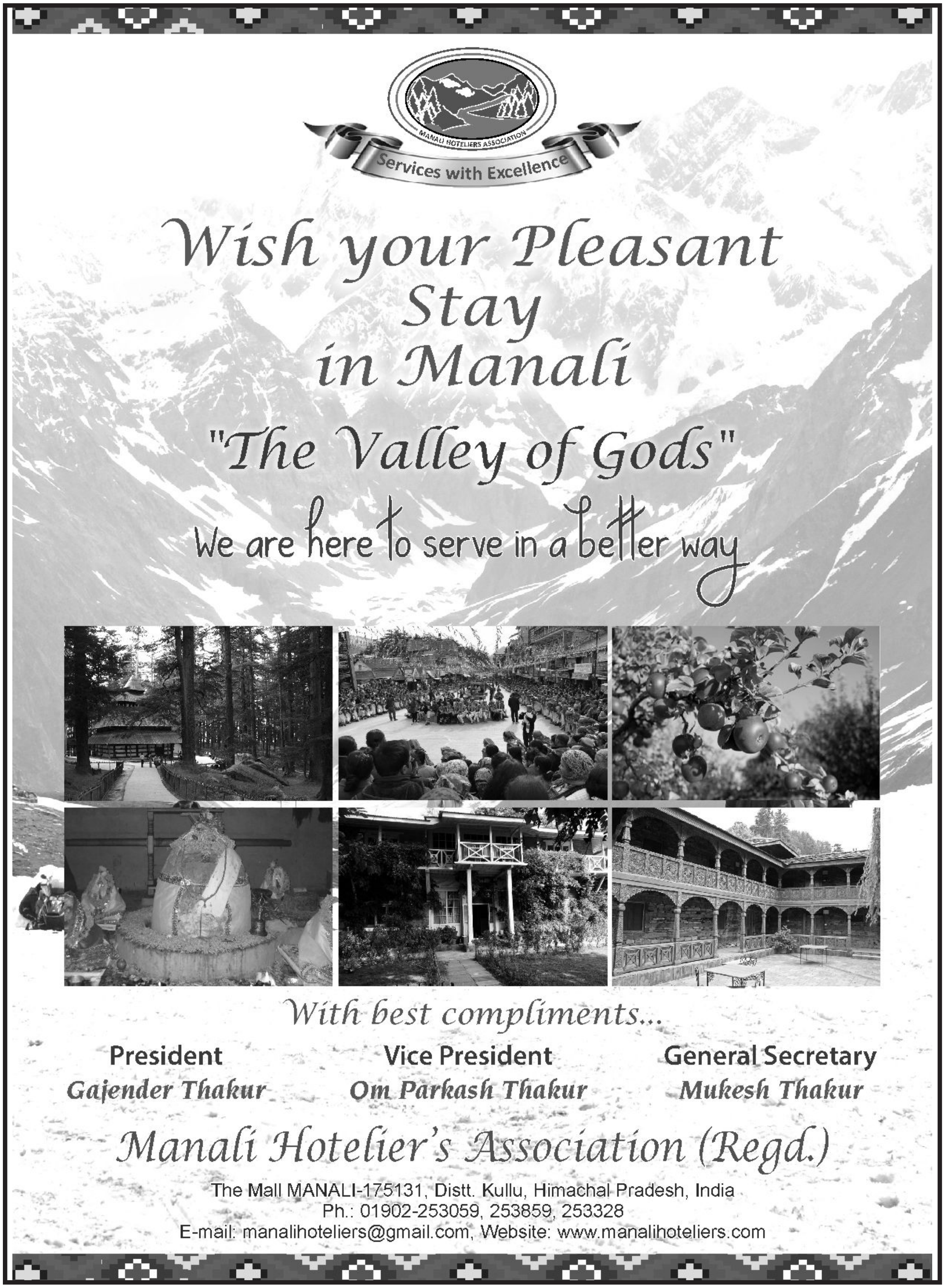
MANALI HOTELIERS ASSOCIATION
Services with Excellence
Wish your Pleasant Stay in Manali
"The Valley of Gods"
We are here to serve in a better way
With best compliments...
President
Gajender Thakur
Vice President
Om Parkash Thakur
General Secretary
Mukesh Thakur
Manali Hotelier's Association (Regd.)
The Mall MANALI-175131, Distt. Kullu, Himachal Pradesh, India
Ph.: 01902-253059, 253859, 253328
E-mail: manalihoteliers@gmail.com, Website: www.manalihoteliers.com

सरकारी स्कूलों में मई से बिना बैग जाएंगे बच्चे

पहली से बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थी महीने के आखिरी दिन अब बिना बैग के स्कूल जाएंगे। माह के आखिरी कार्य दिवस पर स्कूलों में आधे दिन विभिन्न स्पर्धाएं एवं अन्य गतिविधियां होंगी। लंच ब्रेक तक बच्चों को रचनात्मक कार्य सिखाए जाएंगे। मध्यांतर के बाद विद्यार्थियों को छुट्टी दे दी जाएगी। मई से प्रदेश के सभी सरकारी स्कूलों में यह व्यवस्था शुरू करने की तैयारी है। शिक्षा विभाग ने इसे लागू करने का प्रस्ताव सरकार को भेज दिया है। प्रदेश सरकार से मंजूरी मिलते ही बैग फ्री डे की व्यवस्था हो जाएगी। सीएम जयराम ठाकुर ने अपने पहले बजट भाषण में महीने का एक दिन बैग फ्री करने का एलान किया था। इसे व्यावहारिक रूप देने के लिए शुक्रवार को शिक्षा निदेशालय में एक बैठक आयोजित हुई। बैठक में घोषणा को अमलीजामा पहनाने के लिए गठित कमेटी ने विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करने के बाद महीने के आखिरी कार्य दिवस को बैग फ्री करने के प्रस्ताव पर मुहर लगा दी। मई से योजना को शुरू करने का प्रस्ताव बनाकर इसे सरकार को भेज दिया गया। बैग फ्री डे पर स्कूलों में रचनात्मक कार्य, वाद-विवाद, खेल और सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन होगा। हर विद्यार्थी को किसी न किसी गतिविधि में भाग लेना होगा। इस रोज स्कूलों में सह पाठ्यक्रम गतिविधियां ही संचालित की जाएंगी। अटल टिंकरिंग लैब होंगी स्थापित- भारत सरकार द्वारा अटल इनोवेशन मिशन के तहत प्रदेश के चुने हुए विद्यालयों में अटल टिंकरिंग लैब स्थापित की जाएंगी। विद्यार्थी बैग फ्री डे पर इन लैब में उपकरण एवं औजारों के माध्यम से विज्ञान, तकनीकी, अभियांत्रिकी तथा गणित को समझेंगे। उच्च शिक्षा निदेशक अमरदेव ने बताया है कि बैग फ्री डे का प्रस्ताव सरकार को भेज दिया है। सरकार के आदेशानुसार आगामी कार्रवाई की जाएगी। प्रोत्साहित करने को होंगे विशेष लेक्चर- बैग फ्री डे के दौरान 'अखंड ज्योति मेरे स्कूल से निकले मोती' योजना के तहत स्कूलों में विद्यार्थियों को प्रोत्साहित भी किया जाएगा। संबंधित स्कूल से पढ़ चुके और वर्तमान में उच्च पद पर आसीन अधिकारी या समाज की भलाई के लिए बेहतरीन कार्य कर रहे व्यक्ति को स्कूल में बुलाया जाएगा। उक्त व्यक्ति बच्चों को संबोधित कर प्रोत्साहन करेंगे। ❖

कभी न बनाओ किसी का मजाक

एक वृद्ध रास्ते से कठिनता से चला जा रहा था। उस समय हवा बड़े जोरों से चल रही थी। अचानक उस वृद्ध की टोपी हवा से उड़ गई।उसके पास होकर दो लड़के स्कूल जा रहे थे। उनसे वृद्ध ने कहा- मेरी टोपी उड़ गई है, उसे पकड़ो। नहीं तो मैं बिना टोपी का हो जाऊंगा।

वे लड़के उसकी बात पर ध्यान न देकर टोपी के उड़ने का मजा लेते हुए हंसने लगे। इतने में लीला नाम की एक लड़की, जो स्कूल में पढ़ती थी, उसी रास्ते पर आ पहुंची। उसने तुरंत ही दौड़कर वह टोपी पकड़ ली और अपने कपड़े से धूल झाड़कर तथा पोंछकर उस बूढ़े को दे दी। उसके बाद वे सब लड़के स्कूल चले गए। गुरुजी ने टोपी वाली यह घटना स्कूल की खिड़की से देखी थी। इसलिए पढ़ाई के बाद उन्होंने सब विद्यार्थियों के सामने वह टोपी वाली बात कही और लीला के काम की प्रशंसा की तथा उन दोनों लड़कों के व्यवहार पर उन्हें बहुत धिक्कारा।इसके बाद गुरुजी ने अपने पास से एक सुंदर चित्रों की पुस्तक उस छोटी लड़की को भेंट दी और उस पर इस प्रकार लिख दिया- लीला बहन को उसके अच्छे काम के लिए गुरुजी की ओर से यह पुस्तक भेंट की गई है।जो लड़के गरीब की टोपी उड़ती देखकर हंसे थे, वे इस घटना का देखकर बहुत लज्जित और दुखी हुए। ❖

प्रश्नोत्तरी

1. सबसे पहले कौन से जानवर को अंतरिक्ष में भेजा गया था और उसका क्या नाम था ?
2. भारतीय खेल पुरस्कार में बेस्ट वूमेन फुटबॉलर ऑफ द ईयर अवार्ड किसे मिला है ?
3. ओजोन दिवस किस दिन मनाया जाता है ?
4. भारत में टीवी पर पहली बार समाचार किसने पढ़े थे?
5. पहला ब्रिटिश वायसराय कौन था ?
6. सुभाष चंद्र बोस को किसने सबसे पहले 'नेताजी' कह कर सम्बोधित किया था ?
7. इसरो का 100 वां मिशन कौन सा था?
8. भोपाल गैस कांड आयोग कब गठित हुआ था ?
9. ई.पी.जेड. की फुल फॉर्म क्या है?
10. बहमनी साम्राज्य का प्रसिद्ध सम्राट कौन था ?

प्रश्नोत्तरी के सही उत्तर भेजने वालों के नाम प्रत्येक आगामी अंक में प्रकाशित किए जाएंगे।

पहेलियाँ

1. वह क्या है जो आपके पास जितना ज्यादा होगा, उतना ही आपको कम दिखाई देगा ?
2. ऐसी कौन सी माँ है जो खुद तो काली है लेकिन उसके बच्चे नीले रंग के होते हैं ?
3. ऐसी कौन सी फिश है जो पानी में तैर नहीं सकती ?
4. एक रूमाल के 4 कोने हैं। उनमें से अगर 2 कोनों को काट दिया जाए तो कितने कोने बचेंगे ?
5. पहेली – ऐसी कौन सी चीज है जिसे तोड़ने पर कोई आवाज नहीं आती है ?
6. पहेली – ऐसी कौन सी चीज है जो धूप में नहीं सूख सकती ?

उत्तर: 1. अँधेरा 2. रेलगाड़ी का इंजन 3. सेल्फिश 4. छः 5. विश्वास 6. पसीना

गेयटी थियेटर में विशेषांक विमोचन कार्यक्रम की झलकियाँ

अतिथियों द्वारा विशेषांक विमोचन

विशेषांक की जानकारी देते हुए सम्पादक

कार्यक्रम अध्यक्ष पी.के. सूद अपना
अध्यक्षीय भाषण देते हुए

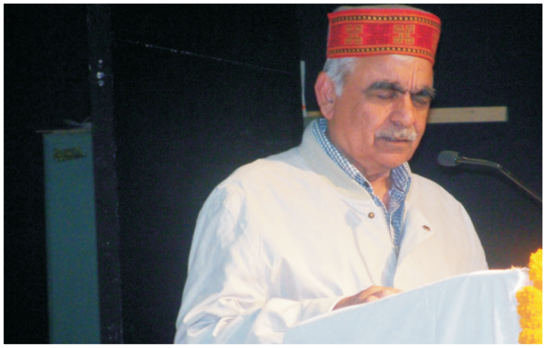

मुख्य अतिथि अशोक मलिक रेज़िडेन्ट एडिटर
(सेनि.) अपना वक्तव्य देते हुए

कार्यक्रम की शोभा बढ़ाते हुए सम्पूर्ण प्रदेश से आए अतिथि एवं शिमला शहर के गणमान्यजन

HP/48/SML (upto 31-12-2017) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः

S.O.S

1.5T MRI CENTER

ऊना, हमीरपुर, बिलासपुर व नंगल
में पहली 1.5 T MRI मशीन

> बेहतर तकनीक, बेहतर क्वालिटी
> नवीनतम उपकरण युक्त लेबोरेटरी

OPEN 24 HOURS

हमें विश्वास है
बेहतर आपका अधिकार है।

क्षेत्र की पहली 1.5T MRI

सामने क्षेत्रीय हस्पताल, ऊना
✆88940-71212

Designed by : New Era Graphics, Shimla Ph. : 2628276

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।

हमें सम्पर्क करें YouTube